घरेलू चिकित्सा

प्रकाशक—

'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद

'चाँद' में प्रकाशित, चुने हुए अनुभवपूर्ण विविध

नुस्खों का अपूर्व संग्रह

लेखक —

अनेक सुविख्यात डॉक्टर,

तथा अनुभवी स्त्री-पुरुष

प्रकाशक —

'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक,

इलाहाबाद

नवीन संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण

नवम्बर, १९२९

तीसरी बार, २०००]   [मूल्य बारह आने

प्राक्कथन
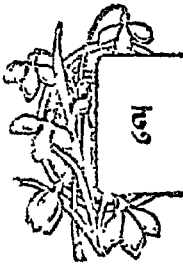
दुर्भाग्य-पीड़िता भारतीय जननी के समक्ष जीवन-संग्राम ही ऐसा संग्राम नहीं है, जो उसे लड़ना पड़ता हो। उसके समक्ष इनके अतिरिक्त ऐसे द्वन्द्व भी हैं, जिनकी वह उपेक्षा नहीं कर सकती। ऐसे द्वन्द्वों में उसकी शारीरिक अवस्था भी एक है, जिसकी उपेक्षा क्यों—ध्यान देने की इच्छा रखते हुए भी यथेष्ट शुश्रूषा नहीं हो सकती। शुश्रूषा के अभाव की वृद्धि उसकी आर्थिक सम्पत्ति ने की है। यदि ऐसा न होता, तो वह निरुपाय क्यों हो जाती—वह तो अपने शारीरिक सौन्दर्य की अवश्य ही अधिकाधिक रक्षा करती।

जो जन धन-सम्पन्न हैं; जो नगर में रह कर मध्यम स्थिति का जीवन व्यतीत करते हैं; अथवा जिन्हें रोगों से त्राण पाने के लिए सुविधाएँ एवं साधन प्राप्त हैं, वे तो इससे मुक्त हो जाते हैं, पर जो दैव-दुर्विपाक की असह्य मार से जर्जरित, धनहीन और भिक्षुकप्राय हैं, उनकी बड़ी दुर्दशा होती है। वे धनाभाव के कारण न तो बहुमूल्य दवाइयाँ ही खरीद सकते हैं, और न अपनी शारीरिक सम्पत्ति की कोई रक्षा ही कर सकते हैं। ऐसे नागरिक एवं ग्रामीण जनों के लिए अल्प मूल्य में प्राप्त होने वाली दवाइयों का यह छोटा सा संग्रह प्रस्तुत किया जाता है। शरीर-सम्बन्धी ऐसे भी

रोग होते हैं, जो मूल्यवान् दवाइयों से अच्छे नहीं होते और धेले-पाई मूल्य की दवाइयों से तत्काल अच्छे हो जाते हैं। प्रस्तुत पुस्तिका में ऐसी ही दवाइयाँ प्रकाशित की गई हैं। इस पुस्तिका में उन्हें स्थान देने के पूर्व उन पर सुयोग्य डॉक्टरों और वैद्यों से सम्मति ले ली गई है। हमने खुद अनेक दवाइयों को आज़माया है, और सन्तोषजनक फ़ायदा उठाया है।

आशा है, क्या ग़रीब, क्या अमीर—सभी के लिए यह संग्रह उपयोगी और लाभप्रद सिद्ध होगा।

विनीत,

प्रकाशक

बाल-रोग

चौमुँजी बनाने की विधि

बच्चों के सर्व रोगों में लाभदायक चौमुँजी होती है। बनाने की विधि यह है कि काकड़ासिङ्गी, पीपल, अतीस, नागरमोथा—सबको बराबर-बराबर कूट-पीस कर छान ले और एक रत्ती रोज़ शहद में चटाए।

स्नान

तीन-चार घण्टे तक पानी को धूप में रख कर यदि नियमित रूप से छोटे बच्चों को नहलाया जाय, तो वे स्वस्थ रहते हैं। किन्तु एक निश्चित समय पर ही उन्हें स्नान कराना चाहिए और हवा न लगनी चाहिए।

बदहज़मी

प्याज़ का रस निकाल कर पिलाने से बालकों के पेट के

कीड़े मर जाते हैं। बालकों को यदि बदहज़मी हो जाय, तो प्याज़ के रस की दो-चार बूँदें पिलानी चाहिए।

दूसरी दवा

यदि बालक सोते-सोते रो उठे तो बदहज़मी समझना चाहिए। बदहज़मी में शहद चटाना और सौंफ़ तथा पोदीने का अर्क़ पिलाना चाहिए।

तीसरी दवा

दूध के साथ सौंफ़ का अर्क़ पिलाने से बालकों का पेट फूलना और अजीर्ण नष्ट होता है।

चौथी दवा

यदि बच्चा दूध पटके (फेंके) या हरे रङ्ग का दस्त हो, तो समझना चाहिए कि इसकी पाचन शक्ति बिगड़ गई है। इस हालत में बंसलोचन, पोदीना सूखा, ज़ीरा सफ़ेद, इलायची छोटी, रूमीमस्तगी—सबको बराबर-बराबर बारीक पीस कर एक तोला शहद के साथ एक माशा मिला कर दिन में कई दफ़ा चटाए, लाभ होगा।

पाँचवीं दवा

सुहागा कोयले पर भून कर लावा बना ले और दूध पीते बच्चे को थोड़ा-थोड़ा दूध में घोल कर पिलाए।

छठी दवा

बालकों के मेदे की ओर विशेष ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि प्रायः सभी बीमारियाँ मेदे से ही उत्पन्न होती हैं।

अतएव जब कभी बालक को साफ़ दस्त न आए तो उसे यह काढ़ा देना चाहिए :—

गुलाब का फूल, मुनक़्क़ा और सनाय एक-एक माशा तथा ख़मीरा और बनफ़्शा ६ माशे—सबको लेकर एक छटाँक पानी में औटा ले और जब आधा रह जाय, तो उसे मसल कर मिश्री मिलाए और छान कर बालक को कुछ गुनगुना ही पिला दे। यह काढ़ा प्रातःकाल ही देना ज्यादा अच्छा होगा।

पेट-दर्द

यदि बालक रोए, हाथ-पैर पटके और प्रायः हाथ पेट की ओर ले जाय, तो समझना चाहिए कि उसके पेट में दर्द है। ऐसी हालत में तुरन्त थोड़ी-सी रूई लेकर उसको गद्दी बना ले और आग की अँगीठी पर तवा रख कर उस पर रूई की गद्दी गरम करके पेट को सेंके अथवा गुलरोग़न गरम करके पेट पर मले या आधी रत्ती हींग माता के दूध में घोल कर बालक को पिला दे।

पेट फूलना

यदि वायु के रुक जाने से बालक का पेट फूल जाय, तो ऐसी हालत में चने का आटा खूब बारीक पीस कर पानी में

सान ले और गरम करके बालक के पेट पर उबटन की तरह मले।

❧

पेट का कीड़ा

बदहज़मी के कारण यदि बालक के पेट में कीड़े हो जायँ तो प्याज़ का रस पिलाना लाभदायक है।

❧

खाँसी

छोटी पीपल का बारीक चूर्ण शहद में मिला कर चटाने से बालकों की खाँसी, ज्वर, तिल्ली, अफरा और हिचकी आदि रोग नाश होते हैं।

दूसरी दवा

वंसलोचन या काकड़ासिङ्गी बारीक पीस, शहद के साथ मिला कर बालक को चटाने से खाँसी दूर हो जाती है।

तीसरी दवा

यदि छोटे बच्चों को खाँसी आती हो, तो वंसलोचन के चूर्ण को शहद में मिला कर किसी प्याले में रख ले और दिन में चार-पाँच बार चटाए, खाँसी दूर होगी। जो न चाटे तो दोनों को दूध में मिला कर पिला दे।

चौथी दवा

त्रिकूट और सेंधा नमक के चूर्ण को गुड़ के शरबत में

मिला कर गरम करके बालक को पिलाने से खाँसी दूर होती है।

पाँचवीं दवा

भुना हुआ सुहागा छः माशे, अधभुना सुहागा छः माशे, काली मिर्च एक तोला—इन सबको ग्वारपाठे के रस में खूब महीन घोट कर मूँग के समान गोली बनाए। दो-दो, तीन-तीन घण्टे पश्चात् एक-एक गोली मुख में डाल कर रस चुसाए।

छठी दवा

भुना हुआ पोस्ता एक तोला, सेंधा नमक दो माशे, काली मिर्च एक माशा—सबको पीस कर खूब बारीक चूर्ण बना ले। दो-दो रत्ती चूर्ण दिन में तीन-चार बार चटाए। यह कफ की खाँसी में विशेष लाभ करता है।

सातवीं दवा

काकड़ासिङ्गी छः माशे, अतीस छः माशे, छोटी पीपल छः माशे—सबको कूट-छान कर बारीक चूर्ण बना ले। दो-दो रत्ती चूर्ण थोड़े से शहद में मिला कर दिन में तीन बार चटाए। ज्वर, खाँसी और वमन में लाभदायक है। अनेक बार का परीक्षित है।

आठवीं दवा

नागरमोथा, अतीस और काकड़ासिङ्गी—तीनों को समान भाग लेकर बारीक चूर्ण बना ले। इसमें से एक या दो रत्ती

चूर्ण इतने मधु में मिलाए कि वह चटनी के समान बन जाय। पुनः दिन में तीन-चार बार बालक को चटाए। ज्वर, कास और वमन में यह प्रायः लाभकर है, क्योंकि यह बाल-रोग की विशेष औषधि है और अनेक बार की परीक्षित है।

नवीं दवा

मूली के बीज छः माशे, काकड़ासिङ्गी छः माशे—दोनों को कूट-पीस कर बारीक चूर्ण बना ले। इसमें से एक या दो रत्ती चूर्ण एक भाग घृत और दो भाग मधु* में मिला कर दिन में तीन-चार बार चटाए।

दसवीं दवा

एक तोला काकड़ासिङ्गी को कूट और कपड़-छान कर चूर्ण बना ले। इसमें से एक रत्ती से चार रत्ती तक चूर्ण (बालक की आयु के अनुसार) एक या आधा माशा मधु में मिला कर चटाए। इससे कफ की खाँसी घर-घर का शब्द और वमन को लाभ होता है।

ग्यारहवीं दवा

दालचीनी छः माशे, काकड़ासिङ्गी छः माशे—दोनों को घोट कर बारीक चूर्ण कर ले। फिर एक मुनक्का धोकर उसके बीज निकाल दे और उपरोक्त चूर्ण दो रत्ती उस मुनक्का में

---

* जिस औषधि में घी और शहद का अनुपान हो, उसमें दोनों को तोल में बराबर न लेना चाहिए, क्योंकि घी और मधु बराबर होने से विषैला प्रभाव करते हैं—सदैव स्मरण रखने योग्य बात है।

भर कर बालक को प्रातः और सायं खिला दिया करे। इसके नित्य सेवन कराने से हर प्रकार की खाँसी में लाभ होता है और कफ की खाँसी में विशेष लाभ होता है। यह औषधि अधिक गुणकारी और अनेक बार की परीक्षित है।

बारहवीं दवा

छिली हुई मुलहटी एक तोला और नागरमोथा एक तोला, कूट कपड़-छान कर चूर्ण बनाए। चार रत्ती चूर्ण को एक माशा मधु में मिला कर माता के दूध में घोल कर पिलाए।

तेरहवीं दवा

काकड़ासिङ्गी, अतीस, छोटी पीपल, छिली हुई मुलहटी और बबूल का गोंद—पाँचों वस्तुओं को समान भाग कूट और कपड़-छान कर चूर्ण बनाए, और एक माशा चूर्ण को दो माशे मधु में मिला कर प्रातःकाल दो बार चटाए। कफ की खाँसी में यह विशेष लाभ करता है।

चौदहवीं दवा

बबूल का गोंद डेढ़ तोला, कतीरा एक तोला, गेहूँ का सत्त (अर्थात् सूजी) एक तोला, छिली हुई मुलहटी छः माशे, सफ़ेद मिश्री बीस तोले—सबको कूट कर चूर्ण बनाए। चार रत्ती चूर्ण को मधु में मिला कर चटाए।

पन्द्रहवीं दवा

बड़ा मुनक्का तीन तोले छः माशे, काली मिर्च छः माशे,

पियाबाँसा छः माशे, भारङ्गी छः माशे, नागरमोथा छः माशे, अतीस चार माशे, बच चार माशे, खुरासानी अजवायन चार माशे, मधु पाँच तोले—सब औषधियों को पीस और कपड़-छान कर चूर्ण बना, मधु में मिला ले। इसमें से बालक की आयु के अनुसार तीन-चार रत्ती औषधि प्रातः सायं चटाए। यह औषधि कफ-कास में विशेष लाभ करेगी।

सोलहवीं दवा

मक्का के भुट्टे के भीतर के गुल्ले को जला कर राख बना ले। एक तोला राख में एक माशा सेंधा नमक मिला कर उसमें से एक-एक, दो-दो रत्ती दिन में दो-तीन बार बालक को चटाए।

सत्रहवीं दवा

चार तोले मिश्री और दो तोले चूना आध पाव पानी में डाल कर घोल ले। पुनः इस पानी को कुछ देर रखने के पश्चात् नितार कर दस-दस बूँद बालक को पिलाने से श्वास, कास और वमन को लाभ होता।

अठारहवीं दवा

छोटी पीपल दो तोले और अतीस छः माशे—दोनों को घोट कर चूर्ण बनाए। दो-तीन रत्ती चूर्ण मधु में मिला कर चटाए। सायं-प्रातः और दोपहर को चटाने से सर्दी, जुकाम और खाँसी में लाभ होता है।

सूखा या मिठवा-रोग

असली काली गौ का मूत्र सूर्य निकलने के पहले ले ले (ख्याल रहे कि गाय बिलकुल काली होनी चाहिए—एक धब्बा भी अन्य रङ्ग का न हो)। यदि एक सेर गो-मूत्र हो तो एक तोला असली काशमीरी केशर लेकर, पहले केशर को गो-मूत्र ही में पीस कर लुगदी बना ले, फिर उसी सेर भर में घोल डाले और छान कर साफ़ की हुई शीशी में भर कर रख ले। छः महीने के बालक को चार बूँद, छः से ऊपर वाले को आठ बूँद उतने ही माता के दूध में सुबह, दोपहर, शाम दिया करे। तीन दिन में मिठवा अर्थात् सूखा की बीमारी को आराम करती है; लेकिन दवा सात दिन तक जरूर देनी चाहिए।

दूसरी दवा

कुत्ते की हड्डी एक तोला, छोटी इलायची का दाना एक तोला और नौसादर चार माशे—सबको ख़ूब बारीक पीस ले। शहद के साथ एक-एक रत्ती खिलाने से लड़कों का सूखा-रोग नष्ट होता है।

तीसरी दवा

यदि बालक के उत्पन्न होने के दिन से लेकर चालीस दिन के भीतर, एक अनबिधा (बग़ैर छेदा) छोटा मोती निगला दिया जाय, तो चेचक न निकलेगी और मिठवा-रोग बिलकुल न होगा।

ज्वर और दस्त

बेलगिरी, पठानी लोध, धाय के फूल, मोचरस, कुरैया की छाल—इन सबको एक-एक माशा लेकर कूट और छान कर एक महीने के बच्चे को एक रत्ती और उसी के अनुसार बड़ी आयु के बालकों को देने से ज्वर और दस्त को लाभ होता है।

❋

ज्वर

कुटकी को बारीक पीस कर छान ले। इस चूर्ण को थोड़ी मात्रा में शहद व मिश्री के साथ मिला कर बालकों को चटाने से उनका ज्वर जाता रहता है।

❋

निनवा-रोग

बालकों के मुँह में छोटे-छोटे दाने पड़ जाते हैं, जिससे बालकों को दूध पीने में बड़ा कष्ट होता है। इसको निनवा-रोग कहते हैं। इसका अङ्गरेजी नाम (Catonhal Stomatitio) है। यह कई प्रकार का होता है। और वह निम्न-लिखित कारणों से होता है :—

(१) एक साल के बच्चे के लिए इसका कारण माता की असावधानी है, क्योंकि बच्चे की माता जैसा अन्न खाएगी, वैसा ही असर बच्चे की तन्दुरुस्ती पर पड़ेगा।

(२) यदि बच्चे की माँ गरम, खुश्क और बादी करने वाला खाना खाएगी, तो माता के दूध में बादी और गर्मी का अंश पैदा हो जायगा, और इस दूध के पीने से बच्चे के मुँह में छाले पैदा हो जायँगे।

(३) आम शिकायत है कि दूध कमी के साथ उतरता है और माता बच्चे की भूख पूरी करने के लिए बाज़ार का दूध पिलाती है, जिससे बच्चों को छाले ही नहीं, वरन् अनेक दूसरे रोग भी सताते हैं। यह बड़ी भारी भूल है। ऐसी दशा में बच्चों को नीचे लिखी हुई विधि से बना हुआ दूध पिलाना चाहिए :—

छः तोले शक्कर लेकर आध सेर पानी में घोल कर एक शीशी में भर ले। यह शक्कर का घोल कहाता है। थोड़ा-सा चूना लेकर एक बर्तन में रख दे और उसको पानी से भर दे। जब चूना नीचे बैठ जाय, तब उसका पानी उतार ले और इसको भी एक शीशी में भर ले। ख़ालिस गाय का दूध तीन चम्मच लेकर उसमें तीन चम्मच शक्कर का घोल और दो चम्मच चूने का पानी मिला ले और गरम करके बच्चों को दो-दो घण्टे के अर्से से पिलाए; इससे बच्चा नीरोग व तन्दुरुस्त रहता है।

बच्चे को अगर क़ब्ज़ होगा, तो भी मुँह में छाले निकल आएँगे, इसलिए एक साल के बच्चे को एक हफ़्ते में दो मर्तबा अण्डी का तेल (Castor Oil) पिला देना चाहिए।

जब बच्चा छालों की बीमारी से पीड़ित हो रहा हो, तो छालों को पोटेशियम क्लोरेट (Potassium Chlorate) के ३/१००, अर्थात् 3% पानी से तीन मर्तबा धोना चाहिए। बाद में टॉनिक एसिड ग्लेसरीन (Tonic Acid Glycerine) या बोरिक एसिड ग्लेसरीन (Boric Acid Glycerine) भी दिन में तीन मर्तबा लगा देना चाहिए।

जब बच्चे के छाले निकल रहे हों, तो माता को चाहिए कि खाना बहुत कम और सादा खाए; दूध ज्यादा पीना चाहिए। इस रोग में मौत का कारण यह है कि रोग की शुरूआत में माताएँ कुछ ध्यान नहीं देती हैं। जब छाले बढ़ जाते हैं, तब कुछ चिन्ता करने लगती हैं। फिर इन छालों में एक प्रकार का ज़हर (Poison) हो जाता है, जिससे बच्चा न खा सकता है और न आराम से साँस ले सकता है। बुख़ार हो जाने के कारण बहुत जल्द क़मजोर हो जाता है और फिर इस संसार को छोड़ कर चला जाता है।

दूसरी दवा

दारुहल्दी, मुलहटी, हरड़, चमेली के पत्ते—सबको शहद में पीस कर लेप करने से बालक के मुँह के छाले शीघ्र ही आराम हो जाते हैं।

तीसरी दवा

शीतलचीनी (कबाबचीनी), पपड़िया कत्था, बंस-

लोचन और चार दाने छोटी इलायची—सबको बारीक पीस कर कपड़-छान करके बालक के मुँह में छिड़कने से बच्चे की लार टपकने लगेगी और छाले तीन-चार बार लगाने से ही आराम हो जायँगे।

चौथी दवा

गावज़बाँ (जला हुआ), वंसलोचन, छोटी इलायची का दाना, कत्था सफ़ेद (पपड़िया) शीतलचीनी, अनार की कली और गेहूँ का निशास्ता—इन सबों को दो-दो माशे लेकर किसी साफ़ पत्थर की सिल पर खूब बारीक पीस ले और कपड़े में छान कर रख ले। दो-दो घण्टे बाद उँगली से बच्चे का मुँह खोल कर लगा दे। मुँह पकने पर बच्चे को सिवाय माता के दूध के और कोई चीज़ खाने को न देना चाहिए, क्योंकि मीठी और नमकीन सभी चीज़ें बच्चे के मुँह में लगती हैं।

नेत्र-रोग

यदि बालक के नेत्र दुखते हों, तो पाँव के नाखन पर लाल मिर्च पीस कर लेप करे।

हिचकी

यदि बालक को हिचकियाँ बहुत आएँ और आप से

आप न बन्द हों, तो सौंफ़ और शक्कर पीस कर पिलाए या शहद चटाए।

दूसरी दवा

यदि बालक को हिचकी अधिकता से आने लगे और अपने आप बन्द न हो, तो कलौंजी एक माशा बारीक पीस कर तीन माशे शहद में मिला कर चटाए।

❈

कनछेद-दर्द

चूहे की मींगन और हल्दी—दोनों को पानी में घिस-कर लेप करने से तत्काल के सूई से छिदे हुए कान कदापि नहीं पकते और उनकी पीड़ा बिलकुल कम हो जाती है।

❈

प्यास

पीपल, मुलहटी, जामुन और आम के पत्ते—इन सबको एक में पीस, शहद में मिला, चटाने से बालक की तृष्णा दूर होती है।

❈

अफरा

सेंधा नमक, सोंठ, इलायची, हींग और भारङ्गी के चूर्ण को घी अथवा जल के साथ सेवन कराने से बालक का अफरा और वातज शूल नष्ट होता है।

❈

पलक गिरना

आक के दूध में रूई भिगो कर साया में सुखा ले और चमेली के तेल में बत्ती बना कर काजल तैयार कर ले। यह काजल आँख में लगाने से फ़ौरन् पलक जमेंगे।

❋

जिगर की दवा

दो चावल भर नौसादर (आयु के अनुसार) बच्चों को प्रतिदिन सवेरे दूध में घोल कर देने से जिगर बढ़ने का भय नहीं रहता।

❋

दस्त

जीरा सफ़ेद, बीज निकला मुनक्क़ा, हरा पोदीना, काला नमक—इन सबको सिल पर महीन पीस ले और उसे दिन में तीन-चार बार चटाए। परन्तु चटनी रोज़ ताज़ी बननी चाहिए। हरा पोदीना न मिले, तो सूखा ही डाल दे।

दूसरी दवा

ज़रा-से प्याज़ के रस में बाजरे बराबर अफ़ीम घोल कर पिलाने से बालक के दस्त बन्द हो जाते हैं।

तीसरी दवा

नेत्रबाला, धाय का फूल, लोध, बेलगिरी, गजपीपली—इन सबका काढ़ा अथवा चूर्ण शहद के साथ सेवन कराए तो बालकों के दस्त बन्द हो जाते हैं।

चौथी दवा

सोंठ, अतीस, नागरमोथा, सुगन्धबाला और इन्द्रजौ—इन सबका काढ़ा सवेरे ही पिलाने से बालकों के सब तरह के दस्त आराम होते हैं।

卐

चुन्ना-रोग

हींग को पानी में घोल कर गुदा में लगाने से बालक का चुन्ना-रोग आराम हो जाता है। नीम की दातून को पानी में घिस कर लगाने से भी आराम हो जाता है, अथवा केवल नीम के तेल लगाने से भी बहुत जल्द आराम होता है।

卐

पसली चलना

घोड़े के अगले पैर के जोड़ के पास एक ठेक होती है (जैसे आदमियों के पैर की छिगुलियों में जूता पहनते-पहनते पड़ जाती है, उसे काट कर छः महीने की उम्र के बालक को पीस कर पिला देने से पसली चलना बन्द होता है।

दूसरी दवा

गन्धाविरोजे की पट्टी पसली के स्थान पर बराबर बाँधने से बच्चों की पसली चलने को आराम होता है।

तीसरी दवा

सूअर का घी पिलाने से भी बच्चों का पञ्जर (पसली) चलना बन्द होता है।

चौथी दवा

अफ़ीम को गरम कर पेट पर लेप करने से बच्चों का पसली चलना बन्द होता है।

पाँचवीं दवा

जौ की राख को जल में घोल कर राख के स्थिर हो जाने पर स्वच्छ जल अलग करले, पश्चात् उसमें मिश्री मिला, चाशनी द्वारा शर्बत तैयार कर, किसी शीशे के वर्तन में रख ले। आवश्यकतानुसार प्रति दिन थोड़ा-थोड़ा बालकों को देने से पाचन-शक्ति ठीक रहती है तथा इससे बालकों को पसली का रोग नहीं होता, और बालक इसे बड़े चाव से पीते भी हैं। बालकों को अन्य बाज़ारू शर्बत, मिठाई आदि स्वास्थ्य-नाशक पदार्थों को न देकर इसे देना परम लाभ-दायक है।

छठी दवा

पहले जहाँ तक हो सके, बालकों को यदि दो-तीन दस्त करा दिए जायँ तो शीघ्र ही लाभ की सम्भावना रहती है। इसका सहज उपाय यह है—गुल बनफ़शा, गुल नीलोफर, गुलाब के फूल, मकोय, उन्नाब, लिसोढ़ा और मुनक्का एक-एक माशा; गुलकन्द एक तोला और अमल्तास का गूदा तीन माशे—इन सब दवाइयों को डेढ़ छटाँक पानी में औटाए और जब पानी आधा रह जाय, तब मल कर थोड़ी सी मिश्री मिला कर छान ले। बालक को दो-तीन अथवा चार बार

(अवस्थानुसार) थोड़ा-थोड़ा गुनगुना करके पिलाए और एक तोले प्याज़ के अर्क़ में तीन माशे एलुआ गर्म करके पसलियों पर लेप भी कर दे।

सातवीं दवा

खाने का सोडा चार माशे, आक की जड़ की छाल तीन माशे, जवाखार छै माशे, असारेवन्द छः माशे—सबको लेकर चूर्ण करले। एक रत्ती रोज़ माँ के दूध में देने से बच्चों की पसली चलना वन्द हो जाता है।

आठवीं दवा

बारहसिङ्गा को पानी में घिस कर गर्म करके लगाने से लाभ होता है।

दाँत निकलना

अधिकतर बच्चों के दाँत छठे महीने में निकलते हैं। इसके पूर्व निकलना अपशकुन तथा इसके बाद रोग समझा जाता है। पहले नीचे के मसूड़ों में दो दाँत निकलते हैं, पीछे ऊपर के दो। इसके पश्चात् धीरे-धीरे आस-पास के। दो वर्ष में सम्पूर्ण दाँत निकल आते हैं। जब दाँत निकलने को हों, अर्थात् छठे महीने में मसूड़ों पर कुतिया का दूध मलने से जल्दी निकल आते हैं। यदि दाँत निकलता हो और तकलीफ़ बहुत हो, तो हरी मकोय का पानी और गुलरोग़न गरम करके उँगली से बालक के मसूड़ों पर

मले। और जब निकलने लगे, तब तेल गुनगुना करके एक-दो बूँद कान में डाल दे।

दूसरी दवा

सँभालू की जड़ का छोटा टुकड़ा बच्चों के गले में बाँधने से शीघ्र सुखपूर्वक दाँत निकलते हैं।

तीसरी दवा

बालक के मसूड़े को बुझे हुए चूने से मले अथवा धाय के फूल, पीपल, आँवला इनके रस से घिसे, तो बालक के दाँत बड़ी आसानी से बिना दुख के निकल आते हैं।

चौथी दवा

बालक के गले में सीप लटकाने से दाँत जल्दी निकल आते हैं।

पाँचवीं दवा

चूना और शहद मिला कर दाँतों की बाली (मसूड़े) पर लगाने से बालक के दाँत जल्दी निकल आते हैं।

छठी दवा

सुहागे का लावा पीस कर और शहद में मिला कर चटाए या मसूड़ों पर मले।

❦

सर्दी या शीत-रोग

यदि बालक को ठण्ढ लग गई हो, तो ज़रा सी केशर

दूध में घोल कर पिला दे । जाड़े में तीसरे-चौथे दिन बालक को केशर दे देना बहुत लाभदायक होता है ।

दूसरी दवा

पान लगा कर उसमें अजवायन डाल ले और बीड़ा बना कर थोड़े से पानी में औटाए । जब पानी आधा रह जाय, तो छान कर बालक को पानी पिला दे । सवेरे-शाम दो-तीन दिन तक पिलाने से बालक स्वस्थ हो जायगा ।

तीसरी दवा

माता के दूध को कड़ुवे तेल के दीपक पर गर्म करके बच्चे की अवस्थानुसार नमक डाल दे, और इस नमक से फटा हुआ दूध बच्चे को पिला दे । यह दूध छोटे बच्चे को भी दिया जाय, तो कोई हर्ज नहीं है ।

चौथी दवा

ठण्ढ लगने पर बच्चे को ब्राण्डी की कुछ बूँदें पिला दे। बिलकुल छोटे बच्चे के लिए एक-दो बूँद काफ़ी है । इसी अन्दाज़ से बड़ी आयु के बालकों को भी देना चाहिए ।

पाँचवीं दवा

पान में कड़ुवा तेल लगा कर और आग पर सेंक कर बच्चे की छाती पर लगाने से भी सर्दी दूर हो जाती है ।

नाभि पकना

नाल काटने के बाद यदि नाभि पक जाय, तो उस पर

एक बड़ी हर्र, एक सड़ी सुपारी और एक बहेड़ा को आग में अधकच्चा जला कर पीस डाले। चूर्ण बन जाने पर तिली का तेल नाभि पर टपकाकर ऊपर से यह चूर्ण बुरक देना चाहिए। दिनभर में दो बार ऐसा करना चाहिए। इससे तुरन्त आराम हो जायगा।

दूसरी दवा

बकरी की मेंगनी की राख पकी हुई नाभि पर लगाने से भी आराम होता है।

तीसरी दवा

हल्दी और घी के फ़ाए को गरम करके लगाने से पकी नाभि में लाभ होता है।

कान का कीड़ा

अगर बालक के कान में कीड़ा या मच्छर घुस जाय, तो मकोय के पत्तों का रस कान में टपकाना चाहिए। इसे वह निकल आएगा।

पेट की मिट्टी

अगर बालक के पेट में मिट्टी हो, तो पका केला शहद में मिला कर खिलाए, आराम होगा।

पेट के कीड़े या कृमि-रोग

अगर पेट में कीड़े हों, तो केशर और कपूर मिला कर खिलाए, और ऊपर से थोड़ा-सा गुनगुना दूध पिला दे।

❦

फोड़े-फुन्सी

यदि कोमल शरीर वाले बालकों के बदन पर फोड़े-फुन्सी के घाव हो गए हों, तो आँवले की राख करके उसे सौ बार धोए घृत में मिला कर लगाए, जरूर लाभ होगा।

❦

हाथ-पैर फटना

सोते समय बच्चों के पैर नमक मिले पानी से धो डालने चाहिए। पहले किसी परात में तेज गरम पानी भर ले और उसमें नमक मिला कर खद्दर के अँगौछे से बच्चों के हाथ-पैर रगड़-रगड़ कर धो दे। उसी नमक मिले साफ़ पानी से मुँह भी धो डाले। इसके पश्चात् वैसलीन हाथ-पैर और मुँह पर मल कर बालक को सुला दे। सवेरे उठने पर सादे गरम पानी से हाथ-पैर और मुँह धो डालने चाहिए, नहीं तो वैसलीन पर मिट्टी और गर्द जम कर हाथ-पैरों को फिर खराब कर देगी। इसी तरह दो-तीन दिन तक करने से हाथ-पैर साफ़ और नरम हो जायँगे।

स्त्री-रोग

रजोधर्म ठीक करने की दवा

छः माशे असगन्ध का चूर्ण और छः माशे खाँड मिला कर सवेरे जल के साथ फाँकने से ऋतु-काल में प्रमाण से अधिक रुधिर जाना बन्द हो जाता है।

गर्भिणी स्त्री का रक्त-स्राव

सिंघाड़े के आटे का दूध के साथ हलुआ बना कर खिलाने से गर्भिणी स्त्री का रक्त-स्राव बन्द हो जाता है।

मासिक-धर्म

नागकेशर डेढ़ माशे लेकर उतनी ही मिश्री के साथ उनचास दिन तक पाव-भर गाय के दूध से उतार जाया करे। इससे रज शुद्ध होगा और मासिक-धर्म ठीक समय पर होने लगेगा।

मासिक-धर्म-अवरोध

त्रिसखपरा घास को पानी में उबाल कर पिलाने से बन्द मासिक-धर्म खुल जाता है।

❦

मासिक-धर्म की अधिकता

पुरानी चारपाई की बान (रस्सी) की राख और पुराना गुड़ मिला कर प्रातः खाने से सात दिन में मासिक-धर्म का विशेष रक्त-स्राव बन्द होता है।

❦

मासिक-धर्म-विकार

जिन स्त्रियों का मासिक-धर्म गर्भ रहने के अतिरिक्त तथा असमय में रुक गया हो या नियमित समय पर न होकर घट-बढ़ जाता हो, तो उन्हें इसका यत्न शीघ्र ही करना चाहिए; क्योंकि इसका अनियमित होना या बन्द हो जाना भारी भूल का परिणाम है। इस अवस्था में तिलों के काढ़े में पुराना गुड़ मिला कर पीने से रुका हुआ मासिक-धर्म होने लगता है।

❦

मूत्रावरोध

बाँस की जड़ को पीस कर पेडू पर लेप करने से शीघ्र पेशाब होता है।

❦

गर्भेच्छा

मासिक-धर्म के चौथे दिन बाद पाँचवें दिन से सूर्यमुखी फूल की जड़ पीस कर तीन दिन योनि में रखने से अवश्य गर्भ रह जायगा। परन्तु यदि वह पहला ही गर्भ होगा तो गिर जायगा—यह पहले विचार करके करना चाहिए।

गर्भाधान

आम के बाँदा को पानी में पीस कर इक्कीस दिन तक ऋतु (मासिक) होने के बाद सेवन करने से गर्भाधान होता है। यह रामबाण औषधि है।

प्रदर और प्रसूत

धूना, और छत की पुरानी सुर्खी में पुराना गुड़ या शक्कर मिला कर सेवन करने से प्रदर और प्रसूत आराम होता है।

प्रसव-पीड़ा

केले की जड़ को गर्दन या बाएँ हाथ में बाँध देने से शीघ्र प्रसव होगा और गर्भ-वेदना दूर होगी।

पेट में बच्चा मरने पर

गाय का गोबर सात माशे से नौ माशे तक गरम पानी में

घोल कर पिलाने से स्त्री के पेट से मरा हुआ बालक तुरन्त निकल जाता है।

ऋतु-शोधन

मासिक-धर्म बराबर दो मास तक जारी रहे या कभी एक-दो दिन को बन्द हो और फिर जाने लगे, इसे 'थन' का रोग कहते हैं। इसमें पुरानी हाँडियों को (जिनमें १५, २०, २५ वर्ष बराबर घी रखते रहे हों) आग में ख़ूब गर्म करके, जब कि उसके अन्दर घी सूख जाय, बारीक पीस कपड़छान कर छः माशे गाय के दूध के साथ खाए। इसमें जितनी ही पुरानी घी की हाँडियाँ होंगी, उतना ही अधिक फ़ायदा होगा।

स्त्रियों का दूध बढ़ाना

ज़ीरे को गाय के घी में भून और कूट कर छान ले। फिर समभाग मिश्री मिला, छः-छः माशे दोनों वक्त दूध के साथ सेवन करे। इस चूर्ण को प्रसूता स्त्री (जो बच्चा पैदा कर चुकी हो) दूध बढ़ाने के लिए सेवन करे। इससे शुद्ध और पौष्टिक दूध बालकों को प्राप्त होता है तथा गर्भाशय शुद्ध होता है।

दूसरी दवा

मुनक्का पीस कर और घी में मिला कर खाने से स्त्रियों के स्तन से विशेष दूध निकलता है।

तीसरी दवा

जिन स्त्रियों को दूध न उतरता हो, वे सतावर को सुखा कर बारीक पीस लें और खाँड़ मिला कर दो-दो तोले की पुड़ियाँ बना लें। एक पुड़िया रोज़ गाय के ताज़े दूध के साथ फाँक लें। फिर दूध इतना उतरेगा कि बच्चा भूखा न रहेगा।

चौथी दवा

यदि बिदारीकन्द (भुई कोहड़ा) के चूर्ण को अथवा शतावर के चूर्ण को दूध में पीए और दूध-चावल का भोजन करे, तो स्त्री के स्तनों में अत्यन्त दूध की वृद्धि हो।

प्रदर-रोग

चौलाई की जड़ चार तोले और रसौत चार तोले— दोनों का चूर्ण कर शहद के साथ चाट कर ऊपर से चावल का धोवन पीना चाहिए या चावल के धोवन में मिला कर पीना चाहिए। इससे प्रत्येक प्रकार का भयङ्कर प्रदर शीघ्र दूर होता है। चूर्ण की मात्रा एक तोला है।

दूसरी दवा

कुश की जड़ को चावल के धोवन के साथ पीसकर और शहद मिला कर पीने से भी प्रदर शीघ्र आराम होता है।

तीसरी दवा

इमली के बीजों को पानी में भिगो कर छिलका अलग कर ले। फिर इस चूर्ण में चौगुनी मिश्री मिला कर नित्य तीन माशे की फङ्की लगाए और ऊपर से कच्चा दूध पीए, तो स्त्रियों का सफ़ेद प्रदर बन्द हो जाता है और धातु पुष्ट होती है। इससे बल भी बढ़ता है।

चौथी दवा

चार तोले अशोक की छाल को दो सेर जल में पकाए। जब लगभग डेढ़ पाव जल बाक़ी रह जाय, तब आग पर से उतार कर छान ले। इसमें इतना ही (डेढ़ पाव) बकरी का दूध मिला कर फिर पकाए, जब आधा (डेढ़ पाव) रह जाय, तब उतार कर ठण्ढा कर ले। इस काढ़े को नित्य सवेरे पीने से स्त्रियों के प्रदर-रोग का नाश हो जाता है।

पाँचवीं दवा

मुलहटी दस माशे, चौलाई की जड़ का रस आठ माशे, दोनों को शहद में मिला कर पीए, तो स्त्रियों के सब प्रकार के प्रदर-रोग दूर हो जाते हैं।

छठी दवा

अशोक की छाल दो तोले, मोचरस एक तोला, धाय का फूल एक तोला और चावल एक तोला—इन सबको सवा सेर पानी में औटा ले, जब पानी पाव भर रह जाय, तो उतार कर चार आने भर रूमी मस्तगी का चूर्ण, चार आने

भर आँवले का चूर्ण, चार आने भर लालचन्दन और आध पाव मिश्री मिला कर आँच में पकाए। जब गाढ़ा हो जाय, तो दो आने भर कपूर का चूर्ण मिला कर शीशे के बर्तन में रख छोड़े। चार आने से लेकर छः आने भर की ख़ुराक बना ले।

यह दवा हर प्रकार के प्रदर के लिए, जो स्त्रियों को प्रायः होता है, एक अनमोल औषधि है। यदि इसे बकरी के दूध के साथ थोड़े दिनों तक लगातार सेवन किया जाय, तो जड़-मूल से प्रदर-रोग दूर हो जायगा।

कुचों का फोड़ा

यदि किसी औरत का दूध पीता बच्चा मर जाय या कुचों में फोड़ा हो गया हो, तो दूध कम करने की ज़रूरत होती है। उस पर खरिया-मिट्टी आठ माशे, और कपूर एक माशा—दोनों को पानी के साथ पीस कर दिन में दो बार कुचों पर लगाए।

दुर्बल गर्भ की वृद्धि

कमलगट्टा और बादाम का हलवा खाने से दुर्बल गर्भ की वृद्धि होती है, तथा पूर्ण होने में भी सहायता मिलती है।

गर्भ-पुष्टि

खाँड, तिल, जौ—इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण

बनाए और शहद के साथ सेवन करे, तो गर्भ की पुष्टि होती है। साथ ही उसके गिरने का भय भी नहीं रहता।

स्तन की सूजन

कचनार की छाल पीस कर स्तन पर लेप करने से स्तन की सूजन को आराम होता है।

स्त्रियों का दूध बहना

अण्डी के पत्तों को पीस कर स्तनों पर बाँधने से स्त्रियों का दूध बहना बन्द होता है।

विविध रोग

ज्वर की दवा

पीपल, काजुए* की गिरी, सफ़ेद जीरा, कीकर या बबूल की पत्ती—इन चारों चीजों को समभाग लेकर कूट ले, फिर ज़रा-सा पानी मिला कर तीन या चार रत्ती की गोलियाँ बना ले। बुख़ार चढ़ने से पहले तीन बार दो-दो गोलियाँ ताज़े पानी के साथ खाए, तो फ़सली बुख़ार दूर हो जाता है।

दूसरी दवा

मुनक्क़ा सात, बादाम सात, कालीमिर्च सात, छोटी इलायची सात, कासनी छः माशे, सौंफ़ छः माशे—इन सबको घोट कर तीन छटाँक पानी बना कर छान ले और तीन तोले मिश्री मिला दे। इसके सेवन करने से बुख़ार और बुख़ार की गरमी व ख़ुश्की शान्त होती है। बादामों को एक या डेढ़ घण्टे तक भिगो कर उस पर के लाल छिलके को उतार देना चाहिए, और मुनक्क़ा के बीज निकाल देने चाहिए।

---

* काजुए को गरम राख में भून लेना चाहिए, ताकि उसका छिल्का छिल जाय।

तीसरी दवा

सोंठ छः माशे, अजवायन देशी छः माशे, अजवायन खुरासानी छः माशे, पीपल छोटी छः माशे, पीपल बड़ी छः माशे, छोटी हर्र छः माशे, हर्रा का छिलका छः माशे, काकड़ासिङ्गी एक तोला, दालचीनी आठ माशे, शीतल चीनी चार माशे, इलायची छोटी एक तोला, वंसलोचन नौ माशे, सत-गिलोय एक तोला, कालीमिर्च छः माशे, मिश्री चार तोले, केशर चार माशे, नागकेशर छः माशे—इन सबको बारीक पीस कर छः माशे शहद के साथ मिला कर रोजाना दोनों समय सेवन करे। कैसा ही बुख़ार क्यों न हो, फ़ौरन् जाता रहेगा।

चौथी दवा

धनिया को साफ़ करके कूट-छान कर रख ले। खाना खाने के बाद तीन माशे धनिया तीन माशे मिश्री मिला कर धीरे-धीरे चबा कर खाए। पन्द्रह-बीस दिन तक खाने से हर प्रकार के ज्वर की हरारत दूर होती है।

पाँचवीं दवा

किसी मनुष्य को कैसा ही बुख़ार आता हो, सात दाने काली मिर्च और तुलसी के सात पत्ते प्रातःकाल पानी में पीस कर पीने से अवश्य अच्छा हो जाता है।

छठी दवा

हरसिङ्गार के पत्ते का रस छः माशे लेकर उसमें

थोड़ा सा शहद मिला कर खाने से ज्वर प्रायः दूर हो जाता है।

सातवीं दवा

फिटकरी पीस कर दो रत्ती सुबह और दो रत्ती शाम को मिश्री मिला कर जल के साथ उतार जाय। ज्वर दूर करने की यह अपूर्व दवा है।

चौथिया

बबूल की पत्ती सूँघने से चौथे दिन आने वाला ज्वर जाता रहता है।

अन्तरा ज्वर

सफ़ेद धतूरा रविवार को उखाड़ कर दाहिने हाथ में बाँधने से पारी का (अन्तरा) ज्वर भाग जायगा।

दूसरी दवा

भुनी हुई फिटकरी चार या छः रत्ती बुख़ार आने से घण्टे या दो घण्टे पहले देने से पारी का बुख़ार आराम हो जाता है। लेकिन गर्भवती स्त्री को न दे, क्योंकि इससे गर्भ गिरने का भय होता है।

शीत-ज्वर

सोंठ, मिर्च और पीपल का काढ़ा पिलाने से जाड़े के बुख़ार वाले का काँपना बन्द हो जाता है।

दूसरी दवा

यदि जाड़े से बुख़ार आता हो, तो एक या दो रत्ती हींग को गुड़ में लपेट कर खिलाने से लाभ होगा।

तीसरी दवा

फिटकरी को आग में भून कर खील बनाए और उसे गिलोय के काढ़े में मिला कर पीस डाले। बाद में झाड़ी के बेर के समान गोली बना कर धूप में सुखा ले। दिन में तीन बार एक-एक गोली खिलाने से शीत-ज्वर को लाभ होता है।

चौथी दवा

यदि किसी को जाड़ा देकर ज्वर आता हो, तो इतवार के दिन सफ़ेद कनेर की जड़ लाकर रोगी के कान में बाँधने से लाभ होता है।

मलेरिया

तुलसी की पत्ती आठ माशे, काली मिर्च तीन दाने, नमक काला (जिस क़द्र ज़रूरत हो)—इनको पानी में घोट कर डेढ़-दो छटाँक के क़रीब पानी बना ले। Malaria

Fever (फसली जाड़ा-बुखार) के दिनों में इस तरह से रोज़ इस पानी को पीना चाहिए। पीने से पहले पानी को कुछ गरम कर लेना चाहिए। इस नुस्खे के रोज़ पीने से मलेरिया-ज्वर का कुछ असर नहीं होता, यानी बुखार नहीं आता।

दूसरी दवा

गुलाबी फिटकरी का लावा दो रत्ती, एक छोटी इलायची के दाने के साथ पीस कर शहद में सुबह-शाम खाने से लाभ होता है। यथार्थ में यह यहाँ की कुनैन है।

तीसरी दवा

इमली रात को भिगो दे। सवेरे मल और छान कर मीठा मिला ले और एक गिलास अथवा आयु के अनुसार, जिसे ज्वर आता हो, पिला दे। एक बार के पिलाने से ही ज्वर दूर हो जायगा। यह रस दस्तावर भी होता है।

चौथी दवा

बारहसिङ्गा और हींग घिस कर माथे और हाथ-पैरं के कुल नाखूनों पर लेप करने से मलेलिया-ज्वर शीघ्र उतर जाता है।

पाँचवीं दवा

मलेरिया के दिनों में पीने वाले जल के साथ तुलसी के पत्ते डाल कर पानी पीने से मलेरिया का भय नहीं रहता। अतः इसे नियम से नित्य पीना चाहिए।

छठी दवा

तुलसी की पत्तियाँ और काली मिर्च को पीस कर अथवा पानी में औटा कर पीने से चढ़े ज्वर में भी लाभ होता है। यदि हो सके तो हरेक को प्रतिदिन चबाना चाहिए। घर में तुलसी के पाँच-सात पेड़ लगाना ज्वर के रोकने का अच्छा साधन है।

❀

सर्दी का दर्द

सरसों के तेल में इलायची का शुद्ध तेल मिला कर मालिश करने से सर्दी के कारण से उत्पन्न हुआ पसली व छाती का दर्द आराम हो जाता है।

❀

ज़ुकाम

हल्दी और शक्कर को आग पर डाल कर उसका धुआँ सूँघने से ज़ुकाम शीघ्र ही आराम हो जाता है।

दूसरी दवा

यदि ज़ुकाम हो जाय तो अफ़ीम और जायफल को गाय के दूध में घिस कर नाक और मस्तक पर लगाना अच्छा है।

तीसरी दवा

बीस-इक्कीस काली मिर्च लेकर ज़रा दरदरी कर पाव

भर पानी में डाल कर औटा ले। फिर छान कर पी ले। इसी भाँति कई दिन पीने से ज़ुक़ाम को आराम होता है।

चौथी दवा

शीशे की डाट लगी शीशी में नौसादर, बे-बुझा चूना और पानी डालने के बाद उसे बन्द कर दे। कुछ देर के बाद शीशी को हिला कर नाक द्वारा शीशी की गैस (वायु) को पान करे। दिन में कई बार ऐसा करने से ज़ुक़ाम के रोगी को बहुत लाभ होता है। सूँघने के बाद शीशी को फ़ौरन् बन्द कर देना चाहिए, नहीं तो उसमें की गैस उड़ कर हवा में मिल जायगी।

पाँचवीं दवा

रात को सोते समय बताशा और काली मिर्च का काढ़ा पीने से आराम होता है।

छठी दवा

इलायची के तेल (युकेलेप्टस ऑयल) को रूमाल में रख कर बार-बार सूँघने से ज़ुकाम शान्त होता है।

प्लेग की औषधि

नीम की नरम पत्तियाँ एक पाव, बनफ़शा एक छटाँक, कलौंजी दो माशे—इन सबका चूर्ण बना कर छः माशे से एक तोला तक सुबह-शाम नमक मिले गुनगुने जल से उतार ले, प्लेग की कठिन से कठिन यातना शान्त हो जाती है।

दूसरी दवा

मदार का स्वरस तीन तोले, गो-घृत तीन तोले—दोनों को मिला कर प्लेग के रोगी को पाँच-पाँच घण्टे पर दो बार पिला दे। रूक्षता, बेचैनी अथवा प्यास लगने पर केवल गो-घृत पिलाए। बारह से पन्द्रह घण्टे के अन्दर दो-दो तोला पिला कर पूर्वोक्त दवा फिर दे दे। अनन्तर पाँच-पाँच घण्टे पर एक-एक तोला, फिर छः छः माशे दे, किन्तु घृत अवश्य देता रहे, जब तक कि पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त न हो, जल बिलकुल न दे। गिल्टियों में बची हुई लुगदी (मदार के पत्ते से रस निकाल लेने के बाद बची हुई वस्तु) बाँधता रहे। इलाज उग्र अवश्य है, परन्तु लाभ जरूर होता है।

तीसरी दवा

घीकुँआर के पट्ठे को चीर कर उसमें रसौत और हल्दी मिला कर गरम करके बाँधे, तो गिल्टी पिघल कर बैठ जाती है तथा पुरानी गिल्टी पक कर बह जाती है।

❋

लू

गर्मी के दिनों में लू लगने पर तथा उससे बचने के लिए कच्चा आम भून कर खाना अथवा जौ का बारीक आटा पतला घोल कर सर्वाङ्ग में लेप करना बड़ा लाभदायक है।

❋

हैज़ा

अकमन (मदार) की जड़ का रस और सात गोल मिर्च मिला कर खिलाने से हैज़ा आराम होगा।

साधारण ज्वर

तुलसी के पत्तों का रस काली मिर्च के साथ पीस कर सेवन करने से साधारण ज्वर दूर हो जाता है।

प्यास

दो-तीन छोटी इलायची, पाँच-सात पत्ते पोदीना, थोड़ी-सी सौंफ़—सबको लेकर पानी में औटा ले। जब उबाल आ जाय, तो उतार कर ठण्डा कर ले और रोगी को दे। इससे ज्यादा प्यास लगना बन्द हो जाता है। इलायची को पहले कोयलों पर भून लेना चाहिए।

वमन में प्यास

नारियल की जटा, मुनक्का और बड़ी इलायची को पानी में डाल कर औटाए, फिर इस पानी को थोड़ा-थोड़ा पिलाए, तो वमन व प्यास बन्द हो जाती है।

खाँसी

काली मिर्च एक तोला, पापल छोटी एक तोला, जवा-खार छ: माशे, अनार का छिल्का दो तोले—इन चारों औषधियों को बारीक पीस कर और आठ तोले पुराना गुड़ मिला कर तीन-तीन माशे की गोलियाँ बना ले। एक गोली मुँह में रख कर धीरे-धीरे उसका रस चूसने से सब प्रकार की खाँसी दूर होती है।

दूसरी दवा

अडूसे (वासा) के पीले (पके हुए) पत्ते में ज़रा-सा सेंधानमक व एक-दो दाना काली मिर्च रख, पान की भाँति चबा कर चूसने से सब प्रकार की खाँसी दूर हो जाती है।

तीसरी दवा

लौंग एक तोला, काली मिर्च एक तोला, बहेड़े का छिल्का एक तोला, कत्था तीन तोले—इन सब औषधियों को बारीक पीस कर बबूल की छाल के काढ़े में घोट कर चने के बराबर गोलियाँ बना कर साया में सुखा ले। एक-एक गोली मुँह में रख कर धीरे-धीरे उसका रस चूसने से सब प्रकार की खाँसी चौबीस घण्टे में दूर होती है। यह गोलियाँ सब तरह की खाँसी के लिए हर मौसम में लाभदायक हैं।

चौथी दवा

तुलसी की मञ्जरी (फूल) अदरक के रस में पीस कर शहद के साथ सेवन करने से खाँसी दूर होती है।

पाँचवीं दवा

काकड़ासिङ्गी, पीपलामूल, बबूल का गोंद, सेंधा नमक—सब चीजों को बराबर-बराबर लेकर कूट कपड़-छान कर ले, फिर उस चूर्ण को आटे के समान गूँध कर चने बराबर गोली बना कर सुखा ले। यह गोलियाँ हर क़िस्म की खाँसी के लिए लाभदायक हैं।

छठी दवा

मिश्री सोलह तोले, वंसलोचन आठ तोले, पीपल छोटी चार तोले, छोटी इलायची के बीज दो तोले, दालचीनी एक तोला—सबको बारीक पीस कर कपड़-छान चूर्ण करे। इस चूर्ण को दो-तीन माशे की मात्रा में शहद मिला कर चाटे। यह सब प्रकार की खाँसी में लाभदायक है और विशेष कर ज्वर के बाद की दुर्बलता और खाँसी में लाभदायक है।

सातवीं दवा

वंसलोचन छः माशे, दालचीनी छः माशे, छोटी इलायची के बीज तीन माशे, काकड़ासिङ्गी छः माशे, पीपल छोटी चार माशे, मिश्री दो तोले, शहद छः तोले—उपरोक्त पहली पाँच दवाइयों को बारीक कूट-पीस कर कपड़-छान कर ले, फिर मिश्री को पीस कर इन सबको शहद में घोल कर चटनी बना ले। उपरोक्त चटनी को दिन में थोड़ी-थोड़ी करके दो-तीन बार चाटने से सब प्रकार की खाँसी निस्सन्देह जाती रहती है।

आठवीं दवा

काली मिर्च एक तोला, छोटी पीपल एक तोला, जवा-खार छः माशे, अनार की बकली दो तोले—इन सब औषधियों को बहुत महीन पीस कर आठ तोले गुड़ में मिला कर तीन-तीन माशे की गोलियाँ बना ले। एक-एक गोली मुख में रख कर धीरे-धीरे रस चूसने से सब प्रकार की खाँसी आराम होती है।

नवीं दवा

थोड़ी सी नीम की पत्तियाँ और थोड़ा सा काला नमक ले, एक मिट्टी की सुराही में दोनों को रक्खे। फिर एक सुराही ऊपर औंधी ढँक दे, और मिट्टी से दोनों के किनारे लेप दे; ताकि दोनों मिल कर बन्द हो जायँ। कण्डे (उपले) या कोयलों की खूब अधिक अग्नि में उसे रख दे। जब अन्दाज हो जाय कि पत्तियाँ जल चुकी होंगी, तब निकाल कर काला नमक व जली हुई पत्तियाँ पीस ले और फिर शीशी में रख ले। दिन में चार-पाँच बार शहद के साथ चाटने से खाँसी दूर होगी।

...वीं दवा

वंसलोचन छः माशे, मुलहटी छः माशे, गोंद क़तीरा छः माशे, गोंद टीकर का ६ माशे, बादाम की गिरी पाँच दाने, सत-उन्नाव तीन माशे, लिसोढ़े ग्यारह दाने, कद्दू के बीज की गिरी छः माशे, इलायची छोटी तीन माशे, काली

मिर्च दो माशे, दालचीनी चार माशे—इन सब चीज़ों को बारीक कूट-छान कर दस तोले शहद में मिला ले। सूखी खाँसी में यह चटनी बहुत गुणकारी है। इसको दिन-रात में पाँच-छः बार चाटना चाहिए। दूध, खटाई, छाछ, दही आदि का परहेज़ रक्खे।

ग्यारहवीं दवा

देशी मिश्री दो तोले, वंसलोचन एक तोला, पीपल छोटी छः माशे, इलायची छोटी तीन माशे, दालचीनी डेढ़ माशे, सत-गिलोय असली छः माशे और देशी शहद आठ तोले। इन सब चीज़ों को कूट, कपड़-छान करके शहद में मिला कर चटनी बना ले। इसके सेवन करने से श्वास, कास, अरुचि, क्षय और खाँसी आदि रोग दूर होते हैं। ज्वर के बाद की कमज़ोरी और खाँसी को दूर करने के लिए यह चटनी रामवाण है।

गिलोय का सत बनाने की यह रीति है कि पहले चालीस तोले हरी गिलोय की लकड़ी लेकर उन्हें इमामदस्ते में खूब कूट ले और दस गुने यानी चार सौ तोले पानी में किसी बर्तन में भिगो दे। चौबीस घण्टे पश्चात् भीगी हुई गिलोय को खूब मसल डाले और लकड़ियों को निचोड़ कर फेंक दे। उस पानी को कुछ देर तक न छुए, फिर आहिस्ता-आहिस्ता ऊपर से पानी को निथार दे। इसी प्रकार फिर उसमें पानी डाले और निथार दे। दो-तीन बार ऐसा करने

के पश्चात् धूप में सुखा ले। यह गिलोय का सत है। बाज़ारू गिलोय के सत में मिलावट होती है, अतः वह काम का नहीं होता।

बारहवीं दवा

ढाक के हरे पत्ते छाँह में सुखा लेने चाहिए। जब सूख जायँ, तब उन्हें किसी बर्तन में जला कर राख कर ले, फिर उसमें काला नमक मिला कर रख ले। पान में एक चुटकी डाल कर दिन में दो-तीन बार खाना चाहिए। यह खाँसी के लिए अच्छी दवा है।

तेरहवीं दवा

देशी मिश्री, काली मिर्च, अदरक यह सब एक-एक तोला लेकर चूर्ण कर डाले। इसके पश्चात् दो तोला घी गरम कर उसमें इस चूर्ण को मिला कर पका ले। इसे दोनों समय सेवन करने से खाँसी को विशेष लाभ होता है।

चौदहवीं दवा

काकड़ासिङ्गी पानी के साथ घोट कर चने के बराबर गोलियाँ बना ले। दिन-रात में तीन-चार गोलियाँ चूसे। इससे सब प्रकार की खाँसी को लाभ होता है।

अन्य उपाय

उक्त औषधियों के अतिरिक्त निम्न-लिखित उपायों से भी खाँसी को लाभ होता है :—

(१) यदि खाँसी उठती हो तो मुँह में पान रक्खे, दब जायगी।

(२) खाँसी उठने पर कूजे की मिश्री तोड़ कर मुँह में डाले और चूसता रहे।

(३) काला नमक लेकर छोटे-छोटे टुकड़े बना ले, खाँसी उठते समय नमक की डलियाँ और काली मिर्च मुँह में डाले।

(४) यदि सूखी खाँसी हो तो मलाई खाय। वह तर होकर अच्छी हो जायगी।

खाँसी की चटनी

त्रिफला एक तोला, पीपल छोटी एक तोला, छोटी इलायची बारह दाने—इन तीनों को खूब बारीक पीस कर कपड़छान कर ले। फिर इसे दो तोले शहद में मिला ले। ज्वर की खाँसी के लिए यह चटनी बहुत ही मुफ़ीद है। इसको थोड़ी-थोड़ी देर करके दिन में दो-तीन बार चाटना चाहिए।

खाँसी व पसली का दर्द

छोटी इलायची नौ माशे, बंसलोचन दो तोले, तज तीन माशे, पीपल एक तोला, मिश्री चार तोले—इन औषधियों को कूट-छान कर रख ले। तीन माशे शहद में मिला कर

चाटने से श्वास, खाँसी, मन्दाग्नि, पसली का दर्द, जीर्ण-ज्वर आदि अनेक रोग दूर होते हैं।

卐

खाँसी व श्वास

तालीस-पत्र एक तोला, छोटी इलायची एक तोला, काली मिर्च दो तोले, सोंठ दो तोले, वज दो तोले, वंसलोचन* चार तोले, पीपल चार तोले, मिश्री सोलह तोले—इन सब औषधियों को बारीक कूट-छान कर मिश्री में मिला ले। यह चूर्ण खाँसी, श्वास, हिचकी और अजीर्णादि में बड़ा उपयोगी है तथा जिगर को ताक़त देता है। इसकी मात्रा तीन माशे से छः माशे तक है। इसे घी या मक्खन में मिला कर खाना चाहिए।

卐

खाँसी व हिचकी

काली मिर्च, अजवायन देशी, सोंठ, काकड़ासिङ्गी, पीपल, पुष्करमूल (पोहकरमूल), कायफल—ये सब दवाइयाँ बराबर-बराबर लेकर कूट-छान कर रख ले। तीन-चार माशे शहद में मिला कर चाटने से हिचकी, वमन, श्वास, खाँसी आदि रोग नाश होते हैं।

卐

---

* वंसलोचन नीले रङ्ग का लेना चाहिए, सफ़ेद नहीं।

सूखी और तर खाँसी

सोंठ, पीपलामूल, पीपल और बहेरा की छाल बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर डाले और चार आने भर चूर्ण को शहद में मिला कर चाटे। इससे सूखी और तर—हर प्रकार की खाँसी दूर होती है।

कफ की खाँसी

अदरक के रस में शहद मिला कर चाटने से कफ की खाँसी और सर्दी का ज़ुक़ाम अवश्य आराम हो जाता है।

दूसरी दवा

अगर खाँसी गीली हो, अर्थात् जिसमें कफ गिरता हो, तो एक छुहारे की गुठली निकाल कर उसमें तीन लौंग और तीन काली मिर्च भर कर अरण्ड के पत्ते में लपेट, अग्नि में जलाए और उसकी राख शहद में मिला कर चाटे। यदि खाँसी खुश्क हो, तो बेदाना मुनक़्क़ा, लिसोढ़ा और अलसी रात में भिगो दे। सुबह उन्हें मल कर छान ले और खाँड मिला कर पिए।

छाती का दर्द

यदि छाती में भीतर या बाहर दर्द हो, तो बारहसिङ्गा, सोंठ और अरण्ड की जड़ घिस कर लगाए।

हिचकी

मुलहटी के चूर्ण को शहद में मिला कर चटाने से हिचकी बन्द हो जाती है।

दूसरी दवा

बकरी के दूध में सोंठ औटा कर पिलाने से हिचकी बन्द हो जाती है*।

तीसरी दवा

पीपल, आँवला, सोंठ सबको बराबर-बराबर लेकर कूट-छान कर शहद के साथ चाटने से हिचकी आराम हो जाती है।

चौथी दवा

आम के सूखे हुए पत्तों को चिलम में रख कर पीने से हिचकी आना बन्द हो जाता है।

पाँचवीं दवा

पीपल का चूर्ण मधु में मिला कर चाटने से भी हिक्का अर्थात् हिचकी बन्द हो जाती है।

छठी दवा

सोंठ और पीपल बराबर-बराबर कूट-छान कर तीन माशे शहद के साथ चाटने से हिचकी दूर हो जाती है।

---

* यदि वक्त पर बकरी का दूध न मिले, तो गरम जल भी प्रयोग में लाया जा सकता है।

सातवीं दवा

जिसे हिचकी कभी आ जाती हो तो उसे दो-तीन घूँट पानी पीने से ही आराम हो जाता है।

आठवीं दवा

हिचकी के रोगी को कच्चा सिंघाड़ा खिलाने से लाभ होता है।

नवीं दवा

गरम चावलों में घृत मिला कर खिलाने से अथवा एक पाव दूध में छः माशे सोंठ औटा कर पिलाने से भी हिचकी आना बन्द हो जाता है।

हिचकी और वमन

मोर के पङ्ख को जला कर उसकी एक माशा राख ६ माशे मधु के साथ मिला कर चाटने से हिचकी, वमन और मिचली-रोग में अवश्य लाभ होता है।

दमा

धतूरे के बीज छः माशे, अफ़ीम दो माशे—दोनों को पानी में पीस ले और तैंतीस गोली बना ले। दिन में तीन गोली खाने से श्वास अर्थात् दमा अच्छा हो जाता है।

दूसरी दवा

थोड़ी सी विषखपरा (गदहपुन्ना) की जड़ पान में रख कर इक्कीस दिन खाने से दमा आराम होगा।

तीसरी दवा

अडूसे (रौंसा या वासा) का पूरा पौधा, जिसमें उसकी जड़, छाल, पत्ते, फूल और फल पाँचों हिस्से हों, लेकर जला ले। यह राख पानी में घोल कर दो दिन तक रख छोड़े। राख नीचे जम जायगी। ऊपर के पानी को आहिस्ते से उतार (निथार) ले, उसमें से जो कुछ पानी रह जाय, उसे आग पर बर्तन रख कर जला ले। यह अडूसे का सत है। इसकी थोड़ी सी मात्रा शहद में मिला कर चाटने से दमा और खाँसी को बहुत लाभ होता है। दाँतों पर इसका मञ्जन करने से दाँतों के बहुत से रोग दूर होते हैं।

चौथी दवा

अजवायन देशी एक तोला, जीरा सफेद एक तोला, काला नमक एक तोला, क़तीरा एक तोला, बबूल का ताजा छिल्का एक तोला, अनार का छिल्का दो तोले, मुलहटी तीन तोले—इन सब चीजों को कूट कपड़-छान करके पानी में खरल कर धनिया के बराबर गोली बना कर सुखा ले। सुबह, शाम और दोपहर को दो-दो गोली खाने से दमा का रोग नाश हो जायगा।

पाँचवीं दवा

पाँच साल का पुराना गुड़ एक छटाँक लेकर सत्यानाशी के स्वरस में सात बार भिगोए गोली बनने योग्य होने पर उसकी चने के बराबर गोलियाँ बना ले, किन्तु प्रत्येक गोली के भीतर मूँग के समान राल की भी गोली भर दे। गोलियों पर चाँदी का वर्क़ चढ़ा कर दोनों समय—सन्ध्या-सवेरे—एक-एक गोली खाए। अनुपान में मूँग की दाल पिए।

छठी दवा

श्वास (दमा) रोग में नौसादर का धुआँ पिलाना लाभदायक है।

जिगर की दवा

सफ़ेद ज़ीरा, काली मिर्च, नौसादर, काला नमक, नींबू का सत, तिरखुल—सबको बराबर-बराबर ले। पहले तिरखुल को तवे पर मीठी-मीठी आँच से भून ले। ज़ीरा और मिर्च भी भून ले, फिर उन सबको मिला कर पीस डाले, ज़रूरत हो तो थोड़ा पानी भी डाल ले। जब खूब बारीक हो तब चने के बराबर गोलियाँ बना ले। जिसको जिगर का रोग हो, उसे दोनों समय दो-दो गोली खिलानी चाहिए। जो बच्चे ऊपरी दूध पीते हों, उनको भी एक गोली रोज़ खिला देने से जिगर का डर नहीं रहता। यदि तिरखुल न मिल सके, तो बाक़ी ५ दवाइयों से ही गोली

बना लेनी चाहिए। यह गोलियाँ जिगर के लिए बहुत अच्छी हैं।

दूसरी दवा

सफ़ेद जीरा भुना हुआ, सुहागा भुना हुआ, काला नमक, तिरखुज़*, काली मिर्च, नींबू का सत—ये सब चीजें बराबर-बराबर और नौसादर चौथाई हिस्सा (एक चीज़ का) ले। सबको पानी के साथ पीस कर देशी चने के बराबर गोली बना ले। जिसको बदहज़मी हो या जिगर बढ़ा हो, उसको दो गोली प्रातः और दो सन्ध्या समय खिला देनी चाहिए। बच्चों को एक ही गोली देनी चाहिए। ऊपर के दूध पीने वाले बच्चों को यदि सुबह व शाम एक-एक गोली खिला दी जाय, तो दूध अच्छी तरह हज़म हो जाता है और जिगर बढ़ने का भी डर नहीं रहता।

दिल धड़कने का इलाज

सेवती के फूलों का गुलक़न्द बना कर खाना चाहिए।

दूसरी दवा

खीरे के बीज, ककड़ी के बीज, काहू के बीज, कासनी, धनिया, कुलफ़ा के फूल, सेवती के फूल, गुलाब के फूल—यह सब तीन-तीन तोले, सफ़ेद चन्दन का बुरादा, कमलगट्टे की गिरी, काली मिर्च, सौंफ़ और ख़स—यह सब डेढ़-डेढ़ तोला

---

* यदि तिरखुज न मिले तो न डाले

और छोटी इलायची के बीज एक तोला—इन सबको अध-कुट करके दो-दो तोले की मात्रा बना ले। एक मात्रा डेढ़ पाव पानी में शाम के वक्त भिगो कर ओस में रख दे। सुबह इसको खूब मल कर छान ले और दो तोले खाँड़ मिला कर पी ले। गर्मी के दिनों में सवेरे के समय इस ठण्ढाई को नित्य पीने से स्मरण-शक्ति बढ़ती है, गर्मी शान्त होती है; खुश्की मिटती है और दिमाग़ की कमज़ोरी तथा दिल की धड़कन दूर होती है।

*

अधकपारी या आधासीसी

सेंधा नमक दो माशे बारीक पीस कर पोटली बाँध ले और उसको पानी में तर करके जिस तरफ़ दर्द हो, उसी तरफ़ के नथने में दो-चार बूँद डाल दे। इससे अधकपारी (आधे सिर का दर्द) तुरन्त आराम हो जाता है।

दूसरी दवा

केशर को घी के साथ पीस कर सुँघाने से अधकपारी अर्थात् आधे सिर में होने वाले दर्द में लाभ होता है।

तीसरी दवा

पुराने गुड़ में थोड़ा सा कपूर मिला कर नित्य प्रातःकाल खाने से अधकपारी का दर्द दूर होता है।

चौथी दव

सेंधा नमक चार माशे, काली मिर्च चार माशे, देशी

तम्बाकू चार माशे—इन सबको एक में पीस कर हुलास बना ले। इसको सूँघने से अधकपारी-रोग शीघ्र ही दूर होगा।

५

शिर-दर्द पर

मेंहदी की पत्ती तीन माशे, केशर एक माशे, मुचकुन्द के फूल चार माशे, चन्दन का बूरा छः माशे और कपूर डेढ़ माशे—इन सबको पानी में पीस कर लेप करे, अवश्य लाभ होगा।

दूसरी दवा

तुलसी की पत्तियाँ छाँह में सुखा कर हुलास बनाए। जरूरत के अनुसार सिर-दर्द के रोगी को दे, दर्द फ़ौरन जाता रहेगा।

तीसरी दवा

सोंठ दो तोला, कपूर छः माशे, नमक लाहौरी छः माशे, गेरू दो तोले—इन सबको कूट कपड़-छान करके सुँघनी सूँघने से सिर का दर्द अच्छा हो जाता है।

चौथी दवा

नजले के कारण यदि सिर में दर्द हो, तो दालचीनी का तेल लगाने से तत्काल लाभ होता है। दाँत तथा दाढ़ों के दर्द में भी यह तेल बहुत लाभदायक है। इसकी मालिश से सर्दी के कारण उत्पन्न हुआ दर्द दूर हो जाता है।

पाँचवीं दवा

यदि गर्मी या खुश्की से सिर में दर्द हो, तो बकरी के घृत का मक्खन मलना उचित है।

छठी दवा

केशर, गुड़ और घी—तीनों को मिला कर लेप करने से सिर-दर्द मिटता है।

दिमाग़ की कमज़ोरी

बादाम की गिरी सात दाने, मग्ज़-कद्दू तीनमाशे, तरबूज की बीज-गिरी तीन माशे, केशर एक रत्ती—इन सबको दस तोले पानी में पीस कर दो तोले मिश्री, तीन तोले घी डाल कर पका ले और गरम-गरम पिए। इससे दिमाग़ की कम-ज़ोरी दूर होती है।

दूसरी दवा

नागकेशर तीन माशे, तेजपात तीन माशे, सोंठ तीन माशे, इलायची तीन माशे, बंसलोचन तीन माशे, बालछड़ छः माशे, नागरमोथा छः माशे—इन सबको बारीक पीस कर छान ले, फ़िर बूरे की चाशनी तैयार करके पाक बना ले। इस पाक को नित्य खाने से दिमाग़ की कमज़ोरी दूर हो जाती है।

दिमाग़ की गर्मी

सफ़ेद चन्दन का बुरादा दो तोले, कपूर एक तोला, खस दो तोले, केशर तीन रत्ती—इन सब चीज़ों को बारीक पीस कर गाय की नैनूँ में मिला कर मालिश करे। बीस दिन बराबर मालिश करने पर दिमाग़ में गर्मी न रहेगी, और नेत्रों की रोशनी भी बढ़ेगी।

❦

दिमाग़ की तरावट

देशी तम्बाकू दो तोले, गुल बनफ़्शा एक तोला, उस्तखुद्दूस एक तोला, बड़ी इलायची के दाने छः माशे—इन सब चीज़ों को कूट कर हुलास बना ले। इस हुलास को सूँघने से दिमाग़ हमेशा तर रहेगा।

❦

दाँत का दर्द

आमाहल्दी तीन माशे, साधारण हल्दी तीन माशे, फिटकरी तीन माशे, सेंधा नमक तीन माशे—इन सबको पीस कर बारीक चूर्ण बनाए, फिर इस चूर्ण में से एक माशा चूर्ण नींबू का टुकड़ा काट कर उसके ऊपर डाल कर आग पर गरम करे। जब गरम हो जाय तो जिस दाँत में दर्द हो, उसके नीचे दबा कर राल टपका दे। दो-तीन दिन तक ऐसा करने से दाँत का दर्द दूर हो जायगा।

दूसरी दवा

अकरकरा, तेजबल और कपूर—इन तीनों चीजों को एक में पीस कर चूर्ण बना ले। इसके मलने से दाँत का दर्द आराम हो जाता है।

तीसरी दवा

घृत और शहद के साथ पीपल का चूर्ण मिला कर दाँतों पर मलने से दाँत का दर्द मिट जाता है।

चौथी दवा

दाँतों में दर्द हो और कीड़े भी लग गए हों, तो अकरकरा या कपूर दाढ़ के नीचे दबाने से लाभ होता है।

पाँचवीं दवा

वायविडङ्ग के दाने चिलम में रख कर पीने के पश्चात् यदि लार टपका दी जाय, तो दाँत के दर्द में लाभ होता है।

छठी दवा

लौंग का तेल, कपूर, अफ़ीम—इन सबको बराबर-बराबर लेकर ज़रा सी रूई में भिगो कर दाँतों में लगाने से दर्द आराम हो जाता है।

सातवीं दवा

कपूर और गुलाब सिरके में मिला कर गुनगुना करके कुल्ला करे अथवा कपूर और नमक घिस कर दाँतों में मले। इससे दाँतों का दर्द दूर होता है।

दाँत का हिलना

मौलसिरी के पेड़ की छाल को नित्य-प्रति चबाने से हिलते हुए दाँत भी वज्र के समान दृढ़ हो जाते हैं।

दूसरी दवा

हिलता हुआ दाँत यदि निकालना हो, तो उस दाँत की जड़ में एक-दो बूँद सेहुँड़ का दूध डालना चाहिए; परन्तु ध्यान रहे कि यह दूध किसी दूसरे दाँतों में न लगने पाए, नहीं तो वे भी गिर जायँगे।

तीसरी दवा

भुनी हुई फिटकरी एक भाग, शहद दो भाग और सिरका एक भाग—इन तीनों को पका ले। पक कर गाढ़ा हो जाय, तो इसे दाँतों पर मले, हिलना बन्द हो जायगा।

चौथी दवा

दाँत हिलने पर मौलसिरी की दातौन करे या उसकी छाल सुखा और कूट कर उसमें नमक मिला कर मञ्जन करे, तो दाँत बड़े ही दृढ़ हो जाते हैं।

पाँचवीं दवा

केवटी मोथा, हर्रे, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, वायविडङ्ग और नीम के पत्ते—सब बराबर लेकर जल में पीस कर गोली बना के छाया में सुखाए। रात्रि को सोते समय इन गोलियों को दाँतों के नीचे दबा कर सो जाय, तो इससे दाँत बहुत मजबूत हो जाते हैं।

छठी दवा

दशमूल के क्वाथ (काढ़ा) से तेल या घृत पका कर दाँतों पर नित्य लगाने से उनका हिलना बन्द हो जाता है। यह तेल दाँतों को दृढ़ करने के लिए परमोत्तम औषधि है।

मसूड़ों की सूजन

काली मिर्च, फिटकरी भुनी हुई, काली हर्र और लाहौरी नमक पीस कर मसूड़ों पर मलने से मसूड़ों की सूजन दूर हो जाती है।

दाँतों के रोग

दाँतों के सब प्रकार के रोगों के लिए गेरू, फिटकरी और छोटी इलायची पीस कर प्रातःकाल मञ्जन करना हितकर है।

दाँतों में पानी लगना

प्रायः कमजोर दाँतों में पानी लगने से बहुत दर्द होता है। प्रातः समय कुल्ला करने के बाद दाँतों में सरसों का तेल लगाने से इस कष्ट से बचाव होता है।

कान का दर्द

यदि कान में दर्द हो तो सुदर्शन नामक पौधे के पत्ते का ड़, ज़रा गरम करके कान में डालना चाहिए।

दूसरी दवा

तुलसी के पत्तों का रस गरम करके कान में डालने से दर्द जाता रहेगा।

तीसरी दवा

मदार के पके हुए (पीले) पत्ते पर घी चुपड़ कर उसको आग पर सेंक कर उसका गरम-गरम रस कान में निचोड़ना चाहिए।

चौथी दवा

थोड़ा साफ़ नमक लेकर पानी में गुनगुना घोल ले। जब घुल जाय तो जिस कान में दर्द हो, उसमें दो-तीन बूँद डाल दे। एक-दो दफ़ा ऐसा करने से आराम मालूम होगा।

पाँचवीं दवा

अदरक का रस, शहद, सेंधा नमक, तिल का तेल—ये सब बराबर-बराबर लेकर थोड़ा गरम करके कान में डालने से कान का दर्द दूर हो जाता है।

छठी दवा

सरसों का तेल थोड़ा गरम करके कान में टपकाने से कान का दर्द मिट जाता है।

सातवीं दवा

बबूल की छाल के काढ़े से कान धोकर, शहद की एक-दो बूँद डालने से बहता हुआ कान अच्छा हो जाता है।

आठवीं दवा

कान में चाहे जैसा दर्द होता हो; बालक हो, जवान हो; स्त्री हो अथवा पुरुष, केवल शहद को जरा आग पर गुनगुना करके एक बूँद कान में टपका देने से तुरन्त लाभ होता है।

नवीं दवा

कौड़ी को जला कर उसकी भस्म हुक्के के पानी में घोल कर कान में डालने से कान की पीड़ा दूर हो जाती है।

दसवीं दवा

स्त्री का दूध कान में डालने से भी कान का दर्द दूर होता है।

ग्यारहवीं दवा

दो बूँद तेजाब-गन्धक बारह बूँद अर्क-गुलाब में मिला कर चार बूँद कान में डालने से कान का दर्द जाता रहता है।

बारहवीं दवा

कनसलाई (कनसरैया) कान में घुसने पर जलाने का देशी तेल गरम करके कान में डाले।

तेरहवीं दवा

यदि कौंतर (कनखजूरा) चिपट गई हो, तो उस पर कड़ुवा (सरसों का) तेल डाल देने से वह टुकड़े-टुकड़े होकर गिर जायगी। इस कार्य के लिए यदि दीपक का बचा हुआ तेल इस्तेमाल किया जाय, तो बहुत अच्छा है। मूली

के पत्तों का रस निचोड़ने से या उसके मुँह पर खाँड डाल देने से भी उतर जाती है।

बहरापन

करेले के बीज और काला जीरा पीस कर कान में डालने से बहरापन मिट जायगा।

कान-बहना

बबूल की फलियों को चूर्ण करके कान में डालने से कान का बहना शीघ्र बन्द होता है।

दूसरी दवा

मूली को आग में भून कर उसका रस निकाल कर कान में डालने से कान का बहना शीघ्र बन्द हो जाता है।

कान का कीड़ा

यदि कान में कीड़ा घुस जाय, तो मकोय के पत्तों का रस डालना लाभदायक होता है।

दूसरी दवा

ज्यादा दिन कान बहने से उसके मवाद में एक प्रकार का कीड़ा उत्पन्न हो जाता है। इसके लिए स्त्री का दूध और देशी चीनी—इन दोनों को मिला कर कान में डाल देने से

कीड़ा बाहर निकलने लगता है। इसी समय एक छोटी और नुकीली चीमटी लेकर सावधानी से कीड़े को निकाल देना चाहिए।

मन्दाग्नि

जौ के सर्वाङ्ग में एक प्रकार का क्षार होता है, जिसे यवक्षार (जवाखार) कहते हैं, इसी खार के कारण जौ शीघ्र ही पच जाता है। मन्दाग्नि में जौ का पतला दलिया बना कर उसमें नीबू का रस और सेंधा नमक मिला कर पीने से अग्नि का दीपन होता है, और बिगड़ी हुई पाचनशक्ति ठीक हो जाती है।

दूसरी दवा

हरड़, पीपल और काला नमक समभाग लेकर गरम जल से सेवन किया जाय, तो अजीर्ण, मन्दाग्नि और अरुचि को अपूर्व लाभ होता है।

तीसरी दवा

आक (मदार) के मुँहमुँदे फूल चार तोले, काली मिर्च चार तोले, काला नमक चार तोले—ये सब दवाइयाँ इकट्ठी खरल करके झाड़ी के बेर के बराबर गोलियाँ बना ले। एक गोली सवेरे और एक शाम को खाए, तो पेट के सब प्रकार के रोग अजीर्ण, भूख न लगना, मन्दाग्नि, वायुगोला आदि नाश होते हैं।

अजीर्ण

सोंठ और क़लमीशोरा एक-एक आना भर घृत में मिला कर प्रातःकाल सेवन करने से अजीर्ण मिट जाता है।

दूसरी दवा

हींग, वच, पीपल, सोंठ, देशी अजवायन, चीत और कूट—ये सब दवाइयाँ बराबर-बराबर लेकर बारीक कूट कपड़-छान करके साफ़ शीशी में रख ले। छः माशे चूर्ण गरम अथवा ताज़े जल के साथ खाने से हर प्रकार का अजीर्ण, प्लीहा, वायुगोला, शूल, खाँसी और मन्दाग्नि आदि उदर-रोग नाश होते हैं।*

तीसरी दवा

सेंधा नमक डेढ़ तोला, हरड़ एक तोला, आँवला एक तोला, चीत एक तोला, पीपल एक तोला, बड़ी इलायची के बीज एक तोला, पीपरमेण्ट तीन माशे—इन सब दवाइयों को बारीक कूट कपड़-छान कर चूर्ण बनाए। इसकी मात्रा तीन माशे से छः माशे तक है। बदहज़मी या कच्चा अन्न खाने से जो पेट में दर्द हो जाता है, उसको यह चूर्ण तत्काल दूर करता है।

चौथी दवा

केला अधिक खाने से अजीर्ण हो गया हो, तो बड़ी इलायची खिलाना लाभकारक है।

---

* हींग को रूई के फाहे में लपेट कर आग पर भून लेना चाहिए।

पाँचवीं दवा

बड़ी हरड़ का छिल्का छः तोले, बड़ी पीपल चार तोले, चीत दो तोले, सेंधा नमक दो तोले—इन सब चीज़ों को कूट और कपड़ छान करके रख ले। इसे छः माशे लेकर ताजे जल के साथ सेवन करने से अजीर्ण नष्ट होकर भूख बढ़ती है।

छठी दवा

दालचीनी दो तोले, लौंग तीन तोले, सुहागे की खील दो तोले, चीत दो तोले, काली मिर्च एक तोला, सेंधा नमक तीन तोले—इन सब को कूट और कपड़-छान कर ले। तीन माशे चूर्ण को गरम जल के साथ सेवन करने से अजीर्ण तत्काल दूर होता है।

सातवीं दवा

चीत तीन तोले, शुद्ध सुहागा दो तोले, नौसादर तीन तोले, हीरा-हींग (भुनी हुई) तीन माशे, सेंधा नमक डेढ़ तोला, काला नमक डेढ़ तोला, नींबू का सत डेढ़ तोला, पीपल बड़ी ढाई तोले और पीपरमेण्ट छः माशे—इन सब चीज़ों को बारीक कूट कपड़-छान कर साफ़ शीशी में रख ले। इस चूर्ण की मात्रा चार माशे है। अजीर्ण में और जिगर व तिल्ली की ख़राबियों में यह चूर्ण अमृत के समान गुणकारी है

आठवीं दवा

लौंग, विड़नोन, सोए के बीज और अजवायन—सब बराबर-बराबर लेकर पीस डाले और नींबू के रस में खरल कर गोली बना कर रख ले। कैसी ही मन्दाग्नि अथवा अजीर्ण क्यों न हो, इसकी दो गोलियाँ खा लेने से तुरन्त लाभ होता है। नीरोगी यदि भोजन के बाद एक गोली नित्य खा लिया करे, तो इससे भूख खूब लगती है और हाज़मा सदैव दुरुस्त रहता है।

नवीं दवा

त्रिफला (हर्र, बहेड़ा, आँवला) तीन माशे, सनाय साफ़ की हुई तीन माशे और काला नमक चार रत्ती—इन सब को कूट-छान कर रख ले। सोते समय गरम जल के साथ पी जाय तो दस्त साफ़ होता और क़ब्ज़ दूर हो जाता है।

दसवीं दवा

नींबू के रस में केशर घोट कर पीने से अजीर्ण नाश होता है।

❋

पेट का दर्द

अगर बदहज़मी की शिकायत हो या पेट में दर्द हो, तो तुलसी के पत्तों के रस को दो बूँद अर्क़-कपूर में मिला कर पिए।

दूसरी दवा

काला नमक, सेंधा नमक, हींग (भुनी हुई), छोटी हर्र, वच, अतीस—इन सब दवाइयों को बराबर-बराबर ले कर और कूट कर कपड़-छान कर ले। इसकी आठ माशे की मात्रा गरम जल के साथ सेवन करने से पेट का दर्द तुरन्त दूर होता है।

तीसरी दवा

मैनफल, कुटकी, काँजी—इन तीनों दवाइयों को पीस कर गुनगुना करके नाभि पर लेप करने से पेट का शूल आराम हो जाता है।

*

शूल

भूँजी हींग, अजमोदा, पीपरामूल, वायतुमरी के बीज, पीपल, सोंठ, वायविडङ्ग, अजवायन, साँभर नमक और काला नमक—सबको समान भाग ले और पीस-कूट कर चूर्ण कर ले। मात्रा तीन माशे। इससे बदहज़मी, मन्दाग्नि और शूल अवश्य ही अच्छे होते हैं।

*

पेट बढ़ना

यदि किसी का पेट फूल गया हो, तो दो तोले शहद को सात तोले जल में मिला कर एक मास तक पिलाना अच्छा है।

*

भूख

सोंठ, पीपल और भङ्ग—इन तीनों का समभाग चूर्ण मिला कर चार आने भर की मात्रा में सेवन करने से अत्यन्त भूख लगती है।

दूसरी दवा

नौसादर तीन माशे, सफ़ेद ज़ीरा (भुना हुआ) तीन माशे, काली मिर्च तीन माशे, सेंधा नमक तीन माशे, जवाखार तीन माशे, काला नमक तीन माशे, आक (मदार) के ताज़े फूल दो तोले— इन सब दवाइयों को ख़ूब बारीक पीस कर नींबू के रस में खरल कर मटर के बराबर गोली बना ले। गरम पानी के साथ एक-एक गोली सेवन करने से ख़ूब भूख लगती है। यदि पेट में दर्द हो तो भी एक गोली गरम जल के साथ सेवन करना चाहिए। यही गोली हैज़े में गुलाब-जल के साथ सेवन करने से बहुत लाभ करती है।

तीसरी दवा

यदि भोजन के पहले अदरक और सेंधा नमक सेवन किया जाय तो ख़ूब भूख बढ़ती है।

*

वायुगोला

बड़ी हर्र का छिलका एक तोला, सोंठ एक तोला, सनाय एक तोला, निसोत एक तोला, पुरानी सौंफ़ एक

तोला, काला नमक दो तोले—इन सब औषधियों को कूट-पीस और छान कर चूर्ण बनाए। सवेरे छः माशे गरम जल के साथ सेवन करने से वायुगोला शीघ्र नष्ट हो जाता है, किन्तु हल्का और शीघ्र पचने वाला भोजन जैसे—मूँग की दाल, जौ की रोटी, चावल इत्यादि का सेवन करना चाहिए।

दूसरी दवा

हींग एक तोला, बच दो तोले, पीपल तीन तोले, सोंठ चार तोले, अजवायन पाँच तोले, हर्र तीन तोले, चीत सात तोले, कूट आठ तोले—इन सबको कूट और कपड़-छान करके रख ले। इस वायुनाशक चूर्ण को दही के पानी या गरम जल के साथ सेवन करने से वायुगोला, अजीर्ण और तिल्ली आदि पेट के रोग शीघ्र नाश होते हैं।

क़ब्ज़ियत

जवाखार एक तोला, पत्थरखार एक तोला, काला नमक एक तोला और सेंधा नमक एक तोला—इन सब का चूर्ण बना कर प्रातःकाल गरम पानी के साथ खाना चाहिए। आध घण्टा के बाद आध सेर गरम दूध पी लेने से एक घण्टा में दस्त होकर क़ब्ज़ दूर हो जायगा।

❦

नेत्र-सम्बन्धी रोग

त्रिफल का चूर्ण घी और मधु के साथ मिला कर रात्रि के समय खाने से नेत्र-सम्बन्धी सब रोग मिट जाते हैं। किन्तु घी और मधु बराबर मात्रा में न हो—यह ध्यान रहे।

दूसरी दवा

निरमली फल को शहद में घिस कर उसमें किञ्चित् कपूर मिला कर आँख में आँजने से आँख के सब रोग नष्ट हो जाते हैं।

तीसरी दवा

रसौत को स्त्री के दूध में घिस कर रोज़ आँख में आँजने से आँखों के बहुत से रोग दूर होते हैं।

❦

आँख का फूला

बरगद के दूध में कपूर मिला कर आँख में डालने से आँख का फूला कट जाता है।

दूसरी दवा

चिड़चिड़े की जड़ को मधु के साथ घिस कर आँख में डालने से भी फूला कट जाता है।

❦

आँखों की जलन

शहद में केशर घिस कर आँखों में लगाने से आँखों की जलन दूर हो जाती है।

❦

आँख का उठना

अमचूर को लोहे के खरल में डाल कर लोहे के दस्ते से थोड़ा-थोड़ा पानी डाल कर खूब घोटे और आँख के पलक पर पतला-पतला लेप करे, या अनार की पत्तियों को पीस कर टिकिया बना, सोते समय आँखों पर बाँधे। आँख का आना (उठना) आराम हो जाता है। गोभी के पत्तों की टिकिया भी यही गुण करती है।

दूसरी दवा

आँख कैसी ही क्यों न उठी हो, देवीचन्दन (लाल चन्दन) को घिस कर आँखों पर लेप करने से एक दिन में अच्छी हो जाती है।

तीसरी दवा

यदि आँखें कुछ भर्रराई-सी हों तो त्रिफले को पानी में रात को भिगो दे और प्रातःकाल उस पानी से आँखें और सिर को धोए। इस प्रकार प्रति दिन धोते रहने से आँख और सिर सम्बन्धी कोई रोग नहीं होता।

चौथी दवा

दुखती आँख में बड़ का दूध लगाने से लाभ होता है।

आँखों की खुजली

यदि आँख आई हो अथवा गरमी के कारण खुजलाती हो, तो त्रिफला को रात के समय पानी में भिगो दे और

सुबह उस पानी को छान कर आँखों पर छींटा मारे। इससे आँखों का खुजलाना शीघ्र दूर हो जायगा।

❀

नींद न आना

धनिया, लौंग, सोंठ और पीपल को बराबर-बराबर लेकर चूर्ण करे और सुबह-शाम दोनों समय ठण्ढे पानी के साथ खाए, इससे अवश्य फ़ायदा होगा। पर इसको खाते समय उमर का ध्यान रक्खे। अच्छे परिपुष्ट आदमी को तीन-तीन माशे सब चीजें खानी चाहिए।

दूसरी दवा

यदि नींद न आए तो भङ्ग की पत्तियाँ बकरी के दूध में पीस कर पैरों के तलुओं पर लेप करे, लाभ होगा।

तीसरी दवा

खसखस (अफ़ीम या पोस्ते का बीज) बहुत बारीक पीस कर सिर पर मलने से नींद अधिक आती है।

चौथी दवा

जायफल को घी में घिस कर पलकों पर लगाने से खूब नींद आती है।

❀

आँख का दर्द

यदि आँख दुखने के कारण बहुत दर्द हो, तो अफ़ीम डेढ़ माशा गरम पानी में घोल कर लगाए, लाभ होगा।

दूसरी दवा

आँख की पलकों पर रसौत का लेप करने और फिट-करा मिश्रित गुलाब-जल आँख में डालने से उठी आँखें अच्छी होती हैं।

तीसरी दवा

यदि बालक की आँख दुखती हो, तो नीम की पत्तियों का रस कान में (बाईं आँख दुखती हो तो दाहिने कान में और दाहिनी आँख दुखती हो तो बाएँ कान में) टपकाए।

चौथी दवा

दो माशे सफ़ेद फिटकरी को खूब बारीक पीस कर चार छटाँक अर्क़-गुलाब में मिला ले। शीशी हिला कर इस अर्क़ की तीन-चार बूँदें आँखों में डालने से दुखती आँखें अच्छी होती हैं।

पाँचवीं दवा

दुखती हुई आँखों में जिस ओर की आँख दुखती हो, उस ओर के पैर के अँगूठे में एक लाल मिर्च (जो अधिक तीक्ष्ण हो) और मेंहदी की पत्ती को पीस कर बाँधने से लाभ होता है।

आँख का लेप

फिटकरी, गेरू की खील, सोंठ, अफ़ीम, रसौत—इन सब चीज़ों को अन्दाज़ से लेकर खूब बारीक पीस ले और

गोली बना कर सुखा ले। इसे चिकने पत्थर पर घिस कर आँख पर लेप करने से दुखती आँखों को लाभ होता है।

दूसरा लेप

अफ़ीम, फिटकरी की खील, मिश्री या बताशा और घी—इन सबको अन्दाज़ से लेकर गरम घी में बारीक घोट ले। यह लेप हर तरह की दुखती आँखों को फ़ायदा करता है

आँखों की पोटली

पठानी लोध को खूब बारीक पीस कर कपूर में मिला ले। बाद में उसको साफ़ और सफ़ेद कपड़े में रख कर पोटली बना ले और एक कटोरी में पानी ले कर, उसमें पोटली डुबो कर आँखों में लगाए।

रतौंधी

सँभालू के पत्तों का रस आँखों में टपकाने से आराम होता है।

सरी दवा

काली मिर्च को करेले के पत्तों के रस में घिस कर नेत्रों में डालने से रतौंधी में लाभ होता है।

तीसरी दवा

गाय के गोबर के रस में पीपल घिस कर नेत्र में डालने से नक्तान्ध अर्थात् रतौंधी में अवश्य लाभ होता है।

चौथी दवा

मग़ को गाय के मूत्र में रगड़ कर आँख में लगाने से रतौंधी अर्थात् रात में कम दिखाई पड़ने का रोग अच्छा हो जाता है और आँखों की ज्योति बढ़ती है।

पाँचवीं दवा

काली मिर्च थूक में घिस कर आँखों में अञ्जन करने से रतौंधी मिट जाती है।

रोहा

रसौत दो माशे, राल दो माशे, फूल चमेली दो माशे, मैनसिल दो माशे, समुद्र-झाग दो माशे, गोली का शीशा दो माशे, काली मिर्च दो माशे, गेरू दो माशे, सोनामक्खी दो माशे—इन सब चीज़ों को खरल में शहद के साथ खूब बारीक घोट ले; और यदि पानी की आवश्यकता हो तो गङ्गा-जल मिला ले। रात्रि में, सोने से प्रथम, नेत्रों में सलाई से लगा कर सो रहे। यह औषधि रोहों के लिए बहुत ही लाभदायक है, और भली-भाँति आजमाई हुई है। बालक हो या वृद्ध—सभी इसको सेवन कर सकते हैं। इसे छोड़ कर दूसरी औषधि के सेवन की आवश्यकता नहीं है।

दूसरी दवा

फिटकरी एक तोला, लौंग ग्यारह अदद, अफ़ीम चने बराबर, नीम की कोंपलें पच्चीस-तीस लेकर पहले फिटकरी

को पीस ले, फिर तवे पर घी डाल कर लौंग भून डाले, इसके बाद फिटकरी डाल दे। जब फिटकरी भी भुन जाय तब नीम की कोंपलें और अफ़ीम डाल कर घोट ले। जब खूब महीन घुट जाय तो डिबिया में भर कर रख ले। जिन आँखों में रोहे पड़ गए हों या जो दर्द करती हों, उन पर लेप करे, बहुत शीघ्र लाभ होगा।

❀

आँखों की ज्योति

भोजन के पश्चात् शुद्ध जल से हाथ धोकर पोंछने के पूर्व उँगलियों को आँखों में नित्य फेरने से आँखों की ज्योति बढ़ती है।

❀

दाद की दवा

माजूफल, चौकिया सुहागा और नैनुवा-गन्धक को बकरी के दूध में घोट कर गोलियाँ बना ले और आवश्यकता पड़ने पर पानी में घिस कर दाद पर लगाए, आराम हो जायगा।

दूसरी दवा

यदि थोड़ी देर की पीड़ा सँभाल सके, तो टिञ्चर-आयोडीन (Tincture Iodine) का लेप कर दे। यह एक-दो मिनिट तक लगेगा; किन्तु लाभ तुरन्त होगा।

तीसरी दवा

गन्धक, सुहागा, खुरासानी अजवायन और सफ़ेद राल

सब चीज़ें बराबर-बराबर लेकर पानी में पीस डाले और गोलियाँ बना कर रख ले। काम पड़ने पर पानी में घिस कर लगाए दाद अच्छा हो जायगा।

चौथी दवा

मिट्टी का तेल रगड़ने से भी दाद के कीड़े मर जाते हैं और शीघ्र ही आराम हो जाता है।

पाँचवीं दवा

सींचल की जड़ और एक टुकड़ा लहसुन लेकर पीस डाले। दाद (Ringworm) पर लगाने से तुरन्त लाभ होगा।

छठी दवा

अफ़ीम, पँवार के बीज, कत्था और नौसादर को नींबू के रस में पीस कर लगाने से दाद आराम हो जाता है। सब चीज़ें बराबर की होनी चाहिए।

सातवीं दवा

गन्धक एक तोला, सुहागा एक तोला, राल एक तोला, नौसादर छः माशे, मुर्दासङ्ग छः माशे, अर्क़-कपूर तीन माशे, इन सब औषधियों को बहुत बारीक पीस ले, फिर नींबू के अर्क़ में मिला कर लगाए। इसके लगाने से नया और पुराना हर क़िस्म का दाद शीघ्र ही दूर हो जाता है।

आठवीं दवा

सज्जी मिट्टी को नींबू के रस में रगड़ कर दाद में लगाने से आराम होता है।

नवीं दवा

एक तोला पारे को लेकर सिरके में घोटे। जब हल हो जाय, तब उसको दाद के स्थान पर मालिश करे। दस दिन मालिश करने से दाद जड़ से चला जायगा।

दसवीं दवा

पारा, गन्धक और कौड़ी की राख—सबको बराबर-बराबर लेकर खूब बारीक पीसे, फिर नींबू लगा कर यह दवाई खूब मले, इससे दाद शीघ्र अच्छा होता है और दाग़ भी नहीं रहता।

ग्यारहवीं दवा

बन्दरिया (लपटौना) घास की पत्तियों के रस को लगाने से दाद आराम हो जाता है।

बारहवीं दवा

तुलसी के पत्ते, बीज, फूल, छाल तथा जड़—सबको मिला कर पीसने के बाद नींबू के अर्क़ में मिला कर लगाने से दाद, खाज, छाजन आदि को आराम होता है।

तेरहवीं दवा

एसीटिक एसिड (Acitic Acid) को किसी डॉक्टर से राय लेकर लगाने से आराम होता है। उसको लगाने के बाद उसी स्थान पर टिंचर आयोडीन (Tincture Iodine) लगाना आवश्यक है। इस औषधि से सब प्रकार का दाद जड़ से नष्ट हो जाता है।

चौदहवीं दवा

कसौंदी की जड़ को सिरके में पीस कर लेप करने से दद्रु (दाद) को लाभ होता है।

पन्द्रहवीं दवा

अमलतास वृक्ष के पत्तों को काँजी में पीस कर लेप करने से भी दाद चला जाता है।

सोलहवीं दवा

अञ्जीर के हरे पत्ते को खूब बारीक पीस कर दाद में लगाने से लाभ होता है।

दाद और खुजली

एक तोला सरसों के तेल में एक माशा तुलसी के पत्तों का रस मिला कर आग पर रख दे। जब उबलने लगे, तब फ़ौरन उतार ले और ठण्ढा करके जिस जगह दाद या खुजली हो, रोज़ दो मर्तबे मालिश करे, बहुत जल्द फ़ायदा होगा।

दूसरी दवा

गन्धक एक तोला, मुर्दासङ्ग छः माशे, शोरा तीन माशे, बाकुम्बी पाँच माशे, चोख तीन माशे, नौसादर तीन माशे, धतूर के बीज डेढ़ माशे और मैनसिल चार माशे—इन सब दवाइयों को शुद्ध मक्खन में एक तोला नींबू का रस मिला कर लगाए।

तीसरी दवा

गन्धक दो तोले, सुहागा छः माशे, मुर्दासङ्ग छः माशे, फिटकरी छः माशे, कत्था छः माशे, कमीला छः माशे—इन सबको बारीक पीस कर डेढ़ सेर सरसों के तेल में पकाए। इसे खुश्क व तर—दोनों प्रकार की खुजलियों पर लगाने से शीघ्र ही लाभ होता है।

चौथी दवा

कूट, वायविडङ्ग, पँवार के बीज, हल्दी, सेंधा नमक, सरसों—ये सब बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बनाए। इसे नींबू के रस में घोट कर लगाने से दाद और खुजली शीघ्र ही आराम होती हैं।

खुजली

यदि हाथों में खुजली के दाने पड़ गए हों, तो गन्धक का तेजाब एक हिस्सा, नारियल या जैतून का तेल आठ हिस्सा—दोनों को मिला कर मालिश करे।

दूसरी दवा

पारा, गन्धक, काली मिर्च, हल्दी, दारुहल्दी, स्याह जीरा, सफ़ेद जीरा, सिन्दूर और मैनसिल—प्रत्येक छः छः माशे लेकर पहले पारा और गन्धक को खूब घोट ले। जब दोनों कजली हो जायँ, तो शेष दवाइयों का चूर्ण मिला कर दस

तोले गाय के घी में मरहम बना ले। इससे तीन दिन में खुजली अवश्य ही नाश होती है।

बवासीर

एक छटाँक बाँगड़े की पत्ती तथा तीन माशे काली-मिर्च—दोनों को खूब अच्छी तरह घोट डाले और ज़रा गरम करके चने के बराबर गोलियाँ बना कर रख ले। दो गोलियाँ सुबह और दो गोलियाँ शाम को ठण्ढे पानी के साथ निगल ले। कुछ दिन के सेवन करने से खूनी और बादी दोनों ही तरह की बवासीर अच्छी हो जाती हैं।

दूसरी दवा

सोंठ, पीपल, हरड़ और अनार—इनमें से किसी एक का चूर्ण आधा तोला पुराने गुड़ के साथ सेवन करने से आमा-जीर्ण, मलबद्धता और बवासीर नष्ट होती है।

तीसरी दवा

अनार का रस चीनी के साथ सेवन करने से बवासीर का रक्त-स्राव बन्द हो जाता है।

चौथी दवा

गुड़ और हर्र दोनों को २१ दिन खाने से बवासीर दूर होती है।

पाँचवीं दवा

अफ़ीम एक भाग, कपूर चार भाग, सज्जीखार आठ

भाग—इन सब में घृत मिला कर बवासीर पर लेप करने से बवासीर का दर्द मिट जाता है और मस्से सूख जाते हैं।

छठी दवा

रीठा, जो प्राय: कपड़ों के धोने में काम आता है, बड़े काम की वस्तु है। रीठे का बक्कल (छिल्का) एक पाव सुखा कर पहले चूर्ण कर ले और फिर पानी की सहायता से चने के बराबर गोलियाँ बना ले। खूनी बवासीर में ताजे जल से और वादी में मट्ठे से एक-एक गोली सुबह-शाम सेवन करने से अपूर्व लाभ होता है।

सातवीं दवा

सफ़ेद सुरमा अठगुने दही के तोड़ में भिगो कर खरल करे। सूखने पर शराब सम्पुटित कर भस्म कर ले। एक से दो रत्ती तक ताजे मक्खन में मिला कर खाने और साथ ही गाय का मट्ठा पीने से बवासीर निर्मूल होती है।

आठवीं दवा

हल्दी, गुड़, भाँग—तीनों चीजें समभाग लेकर गोली बना डाले और जितनी मात्रा में बीमार हज़म कर सके, खिलाने से बवासीर में लाभ होता है।

नवीं दवा

सूखा जमीकन्द आठ भाग, चीते की छाल आठ भाग, हर्र पाँच भाग, सोंठ पाँच भाग, काली मिर्च एक भाग, पीपल नौ भाग, गुड़ चौदह भाग—इन सबकी चार-चार आने भर

की गोली बना कर व्यवहार में लाए। गोलेपीलू के फलों के खाने से भी बवासीर दूर हो जाती है।

दसवीं दवा

चिरायता, लाल चन्दन, जवासा, नागरमोथा—हर एक को आधा-आधा तोला लेकर आध सेर पानी में औटा ले। जब तीन छटाँक पानी रह जाय, तो उतार कर शहद मिला-कर पिलाने से बवासीर दूर हो जाती है।

ग्यारहवीं दवा

प्रातःकाल देशी चीनी और मूली सेवन करना चाहिए। इससे खूनी बवासीर जाती रहती है।

बारहवीं दवा

हल्दी, गुड़, भाँग—सबको समभाग लेकर गोली बना ले। जितनी मात्रा रोगी हज़म कर सके, खाने से बवासीर को लाभ होता है।

तेरहवीं दवा

स्वच्छ रसौत एक छटाँक मूली के आध सेर रस में भिगो दे। सूखने पर फिर रस छोड़े और खरल करता रहे। इस प्रकार चार बार रस छोड़ कर चने बराबर गोलियाँ बना ले। एक-एक गोली सुबह-शाम—दोनों समय खाकर गाय का ताजा मट्ठा पीने से बादी बवासीर जड़ से दूर होती है।

नकसीर

यदि नकसीर का खून न बन्द होता हो, तो फिटकरी के पानी से कपड़ा खूब तर करके पेशानी (मस्तक) के ऊपर रख दे। ऐसा करने से दस मिनिट में अवश्य खून बन्द हो जायगा।

दूसरी दवा

यदि नकसीर चलती हो, तो पीली मिट्टी में पानी डालकर सूँघने से तुरन्त बन्द हो जाती है।

तीसरी दवा

यदि नाक से खून जाता हो, तो छः माशे फिटकरी का एक तोला जल में घोल कर नाक को धोने और सूँघने से लाभ होता है।

चौथी दवा

सूखा आँवला घृत में भून कर जल के साथ पीस कर लेप करने से भी नाक से खून आना बन्द होता है।

शरीर-दाह

चन्दन में कपूर मिला कर शरीर पर लगाने से शरीर की दाह शान्त होती है।

आतशक

रीठे की गोली दही में लपेट कर खाने और नमक एवं

गरम वस्तुओं का परहेज़ करने से कठिन से कठिन आतशक भी दूर होती है। पर गरम वस्तुओं का परहेज़ न करने से कोई लाभ न होगा।

दूसरी दवा

छः माशे सत्यानाशी की जड़ पाव भर बकरी के दूध में पीस कर दस दिन पीने तथा जड़ को दूध में घिस कर घावों पर लगाने से कठिन से कठिन आतशक और उसके घाव आराम होते हैं।

तीसरी दवा

आक (मदार) की लकड़ी का कोयला प्रतिदिन दो-दो माशे घी और खाँड के साथ मिला कर खाने से एक सप्ताह में गर्मी-रोग (उपदंश) आराम होता है।

अण्ड-वृद्धि

मोम की टिकिया बना कर अण्डकोष में बाँधने से शीघ्र लाभ होता है।

मिर्गी

जब मिर्गी का दौरा हो, तो फ़ौरन बीमार की हथेली पर थोड़ा नमक रख देना चाहिए। ऐसा करने से मिर्गी का दौरा रुक जायगा।

चोट

यदि किसी स्थान पर चोट लग जाय और रक्त बहने लगे, तो पीले फूल की खरैटी के पत्तों का रस निचोड़ कर लगाने से बन्द हो जायगा।

दूसरी दवा

चोट लग जाने पर तीन-चार रत्ती शिलाजीत दूध में मिला कर पिलाने और शिलाजीत को गो-मूत्र में घिस कर लगाने से लाभ होता है।

मोच

नौसादर और शोरा—दोनों चीजें बराबर वज़न में लेकर पानी में मिलाए, फिर उसमें कपड़ा भिगो कर मोच (चोट) की जगह पर रक्खे और मोच की जगह को बराबर भिगोता रहे। चोट वग़ैरह के सबब से जोड़ की जगह जो मोच आ जाती है, आराम हो जाती है।

लक़वा

तिल के तेल में लहसुन मिला कर खाना लक़वे में लाभकारी है।

फोड़ा-फुन्सी

सिन्दूर, कत्था, कमीला, कपूर—इन सबको बराबर-

बराबर भाग ले, बारीक कूट-पीस घी में मिला कर मरहम की तरह लगाने से सब तरह के फोड़े-फुन्सी शीघ्र आराम होते हैं। इसे सब प्रकार के फोड़ों पर बिना विचार किए लगा सकते हैं।

दूसरी दवा

राल, आँवलासार गन्धक, फिटकरी तीन-तीन तोले, और रसकपूर तीन माशे—इन सब औषधियों को खूब बारीक पीस ले। फिर १०८ बार के धोए हुए घी में उपरोक्त औषधियों को मिला ले। इस मरहम से सब प्रकार के फोड़े-फुन्सी शीघ्र अच्छे हो जाते हैं।

तीसरी दवा

घी एक छटाँक, सुफ़ेद कत्था एक तोला, कपूर छः माशे, सिन्दूर तीन माशे लेकर पहले कत्थे और कपूर को अलग-अलग बारीक पीस ले। फिर घी में उपरोक्त तीनों चीजों को भली-भाँति मिला ले। इस मरहम को सब प्रकार के फोड़े-फुन्सी व जख्मों पर लगाने से शीघ्र आराम होता है।

चौथी दवा

घी एक छटाक, मोम ढाई तोले, सफ़ेद कत्था छः माशे, आँवलासार-गन्धक छः माशे, गन्धाबिरोजा एक तोला, फिटकरी छः माशे, रसकपूर तीन माशे, गेरू छः माशे, शीतलचीनी छः माशे, सिन्दूर छः माशे—सबको लेकर पहले घी और मोम को एक कटोरी में रख; आग पर पिघला

ले, फिर बाक़ी सब चीज़ें महीन पीस कर उसी में अच्छी तरह मिला ले। इस मरहम को लगाने से सब प्रकार के फोड़े-फुन्सी, घाव आदि अच्छे हो जाते हैं।

卐

फोड़े पकने के लिए

मैनफल को पानी में घिस कर गरम करके लगाने से फोड़े जल्दी पक जाते हैं।

दूसरी दवा

अजूबा के पत्तों में घी चुपड़ कर गरम करके बाँधने से लाभ होता है।

तीसरी दवा

गाय के दूध में खाने की तम्बाकू पीस कर गरम करके लगाने से अत्यन्त कठिन फोड़ा भी बहुत जल्द पक कर फूट जाता है।

चौथी दवा

अलसी (तीसी) और आटे की पुलटिस (टिकिया) में नमक और प्याज मिला कर गरम करके बाँधना लाभदायक होता है।

पाँचवीं दवा

यदि फोड़ा न फूटता हो तो बँगला पान में घी लगा, गरम कर फोड़े पर बाँध दे, शीघ्र फूट जायगा और पीड़ा जाती रहेगी।

卐

अन्धा फोड़ा

आँगड़ा एक प्रकार की घास होती है, और प्रायः तर ज़मीन पर उगती है। यह गङ्गा-जमुना आदि नदियों के किनारे बहुतायत से पाई जाती है। इसे दो-तीन सेर मँगा कर रख ले और आवश्यकता होने पर बारीक पीस, पुलटिस बना कर घाव पर बाँधता रहे। किन्तु चार-चार घण्टे बाद बदलता जाय। यह एक ऐसी अक्सीर दवा है, जिससे यह अन्धा फोड़ा, जो बहुत ही भयङ्कर होता है और जिसमें प्रायः मनुष्य की मृत्यु तक हो जाती है, केवल इस जड़ी के प्रयोग से तीन-चार दिन में पूर्णतया आराम हो जाता है।

मकड़ी का फलना

इमली की सूखी छाल घिस कर लगानी चाहिए।

दूसरी दवा

यदि बदन के किसी हिस्से पर मकड़ी फल जाय, तो उस पर कत्थे को पानी में पीस कर लेप करना चाहिए।

तीसरी दवा

पीपल की लाख को दही में घिस कर लगाए।

अफ़ीम का विष

हींग को पानी में घोल कर पिलाने से अफ़ीम का विष शान्त हो जाता है।

जलने पर

इमली की छाल को जला कर बहुत महीन पीस ले और सौ बार के धोए हुए ताज़े घी में इसे मिला कर मरहम बना ले। आग से जली हुई जगह पर यह मरहम लगाने से बहुत लाभ होता है।

दूसरी दवा

खाने का चूना बारीक पीस कर अलसी के तेल में मिला कर अग्नि या गरम जल अथवा गरम तेल से जले हुए स्थान पर लगाने से बहुत लाभ होता है—जलन तत्काल बन्द हो जाती है।

तीसरी दवा

इमली की छाल जला कर और महीन पीस कर जले हुए स्थान पर अलसी या नारियल का तेल लगा कर दिन में दो-तीन बार बुरकते रहना चाहिए, इससे बहुत जल्द लाभ होता है।

चौथी दवा

यदि जलने से खाल सिर्फ़ लाल हो जाय, तो दो-तीन घण्टे तक थोड़ा सा दही का चक्का रखने से ही आराम हो जाता है।

पाँचवीं दवा

यदि जली हुई जगह पर केवल अण्डे की सफ़ेदी को सात-आठ दफ़ा लेप करे, तो आराम हो जाता है।

छठी दवा

एक पाव तिल के तेल में चार पैसे भर चूना मिला कर फेंट ले, फिर जहाँ जल गया हो, वहाँ लगाते रहने से शीघ्र आराम होगा।

अन्य दवाएँ

(१) कच्चा आलू घिस कर लेप करे।

(२) मछली के तेल का लेप करे।

(३) एक छटाँक सरसों के तेल में पैसा भर चूना मिला कर लगाते रहने से शीघ्र आराम होता है।

(४) सीप घिस कर अण्डे की सफ़ेदी में मिला कर लगाए।

(५) पुराना चूना दही के पानी में मिला कर लगाए।

(६) जले हुए स्थान को पुनः आग से खूब सेंके।

(७) घीकुँआर के अन्दर का लुआब लगाने से जलन दूर होती है।

घाव की बदबू

यदि घाव में बदबू हो, तो धुली हुई रूई को मिट्टी के तेल में भिगो कर घाव पर लगाने से गन्ध दूर हो जाती है और पीव नहीं पैदा होती।

घाव के कीड़े

यदि घाव में कीड़े पड़ गए हों, तो ढाक के बीज बारीक पीस कर बुरकने से कीड़े मर जाते हैं।

गला मांस

आक (मदार) के पत्तों का चूर्ण घाव पर बुरकने से घाव जल्द भर जायगा और गला हुआ मांस दूर होगा।

कोढ़ की दवा

सत्यानाशी की जड़ एक तोला, बाकची के बीज एक तोला, पिण्डकी हरताल एक तोला—इन तीनों चीज़ों को दही में घोट कर टिकिया बना ले। गो-मूत्र में घिस कर सफ़ेद दाग़ों पर लगाने अथवा साँप की केंचुल जला, कड़ू तेल में फेंट कर दाग़ पर लेप करने से इस दुसाध्य रोग से छुटकारा मिलता है।

दूसरी दवा

लजौनी (छुईमुई) जड़ी को पीस कर कुष्ठ पर लगाने से शीघ्र आराम होगा।

पाण्डु-रोग

एक आना भर कच्ची हल्दी के चूर्ण में घृत, चीनी और

मधु मिला कर कुछ दिन सेवन करने से पाण्डु-रोग आराम होता है।

नहरुवा

बैंगन को मिट्टी के बर्तन में भून, उस पर दही डाल कर जहाँ नहरुवा हो, उस जगह बाँध देने से सात दिन में निश्चय नहरुवा बाहर गिर पड़ेगा।

दूसरी दवा

कूट, हींग और सोंठ बराबर लेकर इनमें सहजने के पत्ते डाल कर पीसे। इसको पीने और लेप करने से शीघ्र लाभ होगा।

अतीसार

बबूल की छाल का रस शहद में डाल कर पिलाने से सात प्रकार का अतीसार दूर होता है।

दूसरी दवा

कटीले को शहद के साथ पिलाने से अतीसार दूर होता है।

तीसरी दवा

तुलसी के पत्ते और काली मिर्च पीस कर पीने से अतिसार दूर होता है।

चौथी दवा

जायफल, जीरा, बेल-गिरी और काली मिर्च—सबको

समभाग लेकर जल के साथ खरल कर ले और छः छः रत्ती की गोलियाँ बना ले। गरम प्रकृति होने से चावलों के धोवन के साथ और कफ-प्रकृति होने से अर्क़-कपूर के साथ सेवन करे। यह दवा अतीसार अथवा पतले दस्तों के लिए राम-बाण है।

प्यासयुक्त अतीसार

जावित्री, जायफल, नागकेशर, लौंग और अफ़ीम—इन सब दवाइयों को चार-चार माशे महीन पीस कर रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा ले। फिर सफ़ेद जीरा और सोंठ चार-चार रत्ती पीस कर उसी में एक गोली रख-कर फाँक ले और ऊपर से एक छटाँक ठण्ढा पानी पिए, प्यासयुक्त अतीसार तत्काल बन्द हो जाता है।

रक्तातीसार

यदि रक्तातीसार हो, तो छः माशे धाय के फूल दही में मिला कर खिलाना चाहिए। पथ्य में दही-चावल देना उचित है।

दूसरी दवा

एक तोला तुख़्म-मलङ्गा को पानी में फुला कर आध घण्टे के बाद इसमें देशी मिश्री मिला लेना चाहिए। इसे

दिन में तीन बार सेवन करने से चौबीस घण्टे में खूनी पेचिश आराम होती है।

✻

प्रमेह

वंसलोचन तीन तोले, इमली के बीजों को भून कर जो गिरी निकले वह चार तोले और मिश्री ७ तोले—इन सबको पीस कर बराबर-बराबर की चौदह पुड़ियाँ बना ले और एक पुड़िया प्रति दिन सुबह गाय के दूध के साथ सेवन करे। इससे प्रमेह आराम हो जाता है। आजकल यह मर्ज़ ८५ फ़ीसदी मनुष्यों को दिखलाई पड़ता है। सबसे पहले इसके कारण को दूर करे, फिर दवाइयों का सेवन करे।

दूसरी दवा

एक तोला पलास के फूल को पीस कर आधा तोला चीनी घोल ले। इसको नित्य सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह दूर हो जाते हैं।

तीसरी दवा

हल्दी के चूर्ण को आँवले के रस में घोल कर पीने से प्रमेह-रोग में आराम होता है।

✻

बहुमूत्र-रोग

गूगल की जड़ को प्रतिदिन तीन माशे शहद के साथ मिला कर खाने से बहुमूत्र-रोग दूर होता है।

✻

बन्द पेशाब

नाभि पर गोपी चन्दन का लेप करने से बन्द पेशाब फिर शुरू हो जाता है।

दूसरी दवा

ककड़ी के बीज, सेंधा नमक, त्रिफला—इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण बना डाले। इसको गुनगुने पानी के साथ खाने से मूत्रावरोध दूर होता है।

❀

पथरी

एक तोला मूली के रस में एक तोला मिश्री मिला कर खाने से पथरी का रोग अच्छा हो जाता है।

दूसरी दवा

तिलों की कोंपल छाया में सुखा कर राख कर ले और तीन माशे लेकर शहद में मिला कर खाया करे।

तीसरी दवा

मूली के पत्तों का रस एक सप्ताह तक पीने से पथरी-रोग को लाभ होता है।

❀

प्लीहा

हल्दी के चूर्ण को घीकुँआर के रस में मिला कर दस दिन तक खिलाने से प्लीहा पिघल जायगी। यह औषधि रामबाण है।

दूसरी दवा

गोबर को जामुन के सिरके में मिला कर लेप करने से प्लीहा आराम होगी।

❦

पेट के कीड़े

नीम की पत्ती का रस शहद में मिला कर खाने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

❦

वमन

पीपल की सूखी छाल जला कर पानी में बुझा, पानी को छान कर पीने से क़ै बन्द हो जाती है।

दूसरी दवा

नारियल की जटा, मुनक़्क़ा, बड़ी इलायची—इन तीनों चीज़ों को पानी में उबाल छान थोड़ा-थोड़ा करके पिलाए। इससे वमन और प्यास दोनों बन्द हो जायँगे।

❦

आँव के दस्त

बेल का मुरब्बा और दही प्रातःकाल बासी मुँह खाने से आँव के दस्त बन्द हो जाते हैं।

दूसरी दवा

इमली के पत्ते और तिपतिया पत्ते (यह खट्टी-खट्टी घास होती है, जो अक्सर अपने आप ही किसी जगह

निकल आती है। इसके हर एक पत्ते के तीन गोल-गोल हिस्से रहते हैं और बच्चे इसे बड़े प्रेम से खाते हैं।) दोनों को बराबर लेकर कुचल कर रस निकाल ले और एक मिट्टी का कुज्जा आग पर रख कर खूब गरम करे। कुज्जा जब बहुत गरम हो जाय, तब उसे आग से निकाल कर उसमें वह रस डाल दे। कुज्जे की गरमाहट से वह उबाल खाने लगेगा। जब उबाल आ चुके, तो रस निकाल, उसमें नमक मिला कर पिलाना चाहिए। पूर्ण आयु वाले को एक छटाँक और बच्चों को अवस्थानुसार पिलाना चाहिए।

तीसरी दवा

इसबगोल की भूसी में दही मिला कर खाए अथवा खाँड़ के शरबत के साथ फाँक ले, तो आँव के दस्त अच्छे हो जाते हैं। बच्चों के लिए इस का प्रयोग बहुत अच्छा होगा।

चौथी दवा

छोटी हर्र को भून कर चूर्ण कर ले। इसमें आवश्यकतानुसार काला नमक मिला कर थोड़ा-थोड़ा सेवन करने से आँव के दस्त बन्द हो जाते हैं।

पाँचवीं दवा

जायफल, छुहारा, काली मिर्च बराबर-बराबर और मसूर के बराबर अफ़ीम, इन सबको पान के रस में घोट कर गोली बना ले। यदि आँव आती हो, तो दही अथवा मट्ठे के

साथ एक-एक गोली सेवन करने से आश्चर्यजनक लाभ होगा।

दस्तों की दवा

जीरा, हरा पोदीना, मुनक्का—इन तीनों चीजों को बराबर-बराबर ले और इनमें काला नमक अन्दाज़ से डाल कर पीस डाले। जब खूब बारीक चटनी बन जाय, तो उसे किसी प्याली में रख ले। दिन में चार-पाँच बार चाटने से यह हर तरह के दस्तों को लाभ पहुँचाती है। यदि हरा पोदीना न मिले, तो सूखा भी डाल सकते हैं। पर हरा पोदीना विशेष लाभदायक है। चटनी रोज़ ताज़ी बननी चाहिए।

दूसरी दवा

प्याज़ के रस में बहुत थोड़ी अफ़ीम मिला कर देने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

तीसरी दवा

सूखा पोदीना एक पाव, पोस्त सिमाख के छिल्के एक छटाँक, काला नमक आधी छटाँक, काली मिर्च एक छटाँक, पीपल एक तोला और थोड़ा सा सेंधा नमक—इन सबको बारीक पीस कर कपड़-छान करके रख ले। यह सब तरह के दस्तों में लाभदायक है। यदि संग्रहणी शुरू ही हुई हो, तो वह भी इसके सेवन से जाती रहेगी। मात्रा दो माशे है।

भोजन करने के बाद दोनों समय और दो बार बीच में खाना चाहिए।

卐

पेचिश

आधा तोला चहारतुख़्म प्रातःकाल बासी मुँह दो-तीन दिन सेवन करने से पेचिश आराम हो जाती है।

दूसरी दवा

बेल का गूदा बकरी के दूध के साथ खाने से ख़ून मिले हुए दस्त व पेचिश में लाभ होता है।

तीसरी दवा

मरोड़फली एक तोला, बेल की गिरी दो तोले, राल एक तोला, इन्द्रजौ एक तोला, इसफ़गोल की भूसी एक तोला—इन सबको पीस कर कपड़छान करके एक आना भर दही के साथ सेवन करने से पेचिश दूर होती है।

पथ्य—दही, चावल और उसमें भुना हुआ ज़ीरा तथा काला नमक डाल कर खाना चाहिए।

卐

साँप का काटा

तम्बाकू के गिट्टक को पानी में घोट कर पिलाने से साँप का काटा आराम होगा।

दूसरी दवा

रीठे के भीतर से निकली हुई गोली के ऊपर के काले

छिल्के को कूट कर कपड़-छान कर ले। छः मासे पाव भर पानी में डाल कर जिसको साँप ने काटा हो, पिला दे। जब तक ज़हर दूर न हो, इसी तरह हर दो घण्टे के बाद पिलाता रहे। इससे किसी को क़ै और किसी को दस्त आकर ज़हर उतर जाता है।

तीसरी दवा

चौलाई की जड़ को चावलों के पानी (धोवन) में पीस कर पिए तो भयङ्कर साँप का काटा भी अच्छा हो जायगा, मामूली साँपों का तो कहना ही क्या है!

ॐ

कुत्ते के काटने पर

धतूरे की जड़ दूध के साथ पीस कर पीने से कुत्ते का विष उतर जाता है।

दूसरी दवा

मुर्ग़े की बीट को पीस कर लेप करे, तो बावले कुत्ते का विष दूर हो जाता है।

तीसरी दवा

कुत्ते के काटने की जगह को दूध में घी मिला कर धोए तथा पुराने घी का पान करे।

चौथी दवा

कुत्ते की काटी हुई जगह पर मुर्ग़े का विष्टा लगाए अथवा चौलाई की जड़ का सत घी में मिला कर सात दिन तक पिलाए।

पाँचवीं दवा

बावले कुत्ते के काटे हुए स्थान पर लहसुन पीस कर लगाए और लहसुन का ही काढ़ा पिलाए।

छठी दवा

घीकुँआर के गूदे में सेंधा नमक मिला कर जहाँ पागल कुत्ते ने काटा हो, बाँधने से तीन दिन में विष दूर हो जायगा।

बिच्छू का डङ्क

बिच्छू के डङ्क मारने की जगह को तेज़ चाक़ू या नश्तर से थोड़ा-सा काट कर पोटाश परमैगनेट (Potash Permeangnate) जिसको कुएँ में डालने की दवा भी कहते हैं, भर देने से ज़हर फ़ौरन उतर जाता है।

दूसरी दवा

ख़ालिस कारबोलिक एसिड (Carbolic Acid) की फुरहरी बिच्छू के डङ्क मारने की जगह पर लगाने से बहुत जल्द आराम हो जाता है।

तीसरी दवा

लटज़ीरे, जिसको चिटचिटे भी कहते हैं, की जड़ पीस कर डङ्क मारने की जगह पर लगाने से आराम होता है।

चौथी दवा

थोड़ी सी चीनी घोल कर कान में डालने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

पाँचवीं दवा

फिटकरी पानी में घोल कर जिस तरफ़ बिच्छू डङ्क मारे उसके दूसरी तरफ़ वाले कान में दो-दो व चार-चार बूँद करके डाले और निकाले। तीन-चार बार इस तरह करने से शीघ्र अच्छा हो जायगा।

छठी दवा

जरा सा चूना पानी में मिला कर एक हाथ में लगाए। जरासा नौसादर पानी में मिला कर दूसरे हाथ में; फिर दोनों हाथों को मल कर जिसे बिच्छू ने काटा हो, सुँघा दे, दर्द आराम हो जायगा।

सातवीं दवा

तुलसी की जड़ को रगड़ कर डङ्क मारे हुए जगह पर लगाने से ज़हर असर नहीं कर सकता।

आठवीं दवा

मदार के पत्ते का रस बिच्छू के डङ्क से पीड़ित मनुष्य की नाक में डाल दे। ख़ूब छींकें आएँगी और रोता हुआ व्यक्ति हँसता दीख पड़ेगा।

नवीं दवा

बिच्छू ने कहीं भी डङ्क मारा हो, यदि उसने बाएँ अङ्ग में डङ्क मारा हो, तो दाहिनी आँख और यदि दाहने अङ्ग में मारा हो, तो बाईं आँख में साफ़ नमक की डली लेकर पानी में घोल कर बूँद-बूँद करके आँख में डाल दे। दो-एक बार ऐसा करने से ही सब कष्ट दूर हो जायगा।

दसवीं दवा

सफ़ेद जीरे को पीस कर उसमें घी और सेंधा नमक मिला कर गरम करे और जहाँ बिच्छू ने डङ्क मारा हो, उस स्थान पर गरम-गरम लेप करे। इससे पीड़ा शीघ्र शान्त होती है। अथवा हुलहुल (क्षुप विशेष) का रस सुँघाने से भी बिच्छू की पीड़ा शान्त होती है।

ग्यारहवीं दवा

सूर्यावर्त (हुलहुल) की पत्ती हाथ से मसल कर सुँघाने से बिच्छू का विष दूर होता है।

बारहवीं दवा

सत्यानाशी कटैली की जड़ (पुष्य नक्षत्र में उखाड़ी हुई) केवल दिखाने से बिच्छू का विष दूर होता है।

तेरहवीं दवा

सेंधा नमक को घी में मिला कर पीने से बिच्छू का विष दूर होता है।

चौदहवीं दवा

सत्यानाशी की जड़ पान में रख कर खिलाने और डङ्क मारे हुए स्थान पर अकरकरा पानी में घिस कर लगाने से लाभ होता है।

पन्द्रहवीं दवा

सफ़ेद कनेर की जड़ घिस कर लगाने से भी बिच्छू के डङ्क में लाभ होता है।

मच्छर काटना

यदि किसी स्थान पर मच्छर काट लें, तो उस स्थान पर प्याज़ का रस लगाना लाभदायक है।

✿

ततैया काटे की दवा

जिस जगह पर ततैया काटे, उस जगह पर खूब बारीक पिसा हुआ नमक जोर-जोर से मलना चाहिए। ऐसा करने से उस समय तो कष्ट होगा, पर जहर बिलकुल नहीं चढ़ने का—चाहे पचास भिड़ों ने क्यों न काटा हो।

दूसरी दवा

बारीक नमक को काटने के स्थान पर मलना चाहिए, ऐसा करने से कभी सूजन न आएगी।

अन्य दवाइयाँ

दियासलाई (माचिस) काटे हुए स्थान पर रगड़े। पानी का बर्फ मले। सिरका लगा दे। काटने वाले स्थान को जोर से दबा कर खून निकाल दे।

✿

चूहे का काटा

सिरस की जड़ बकरे के मूत्र में पीस कर लेप करने या पिलाने से चूहे का जहर उतर जाता है।

दूसरी दवा

चूहे के काटने की जगह पर अफ़ीम को पानी में घिस-कर लेप करने से आराम होता है।

जूँ पड़ना

जूँ पड़ने पर सिर में नीम का तेल लगाना चाहिए।

भाँग का नशा

दही को पानी में मिला कर पीने से भाँग का नशा उतर जाता है।

मुँह के छाले

अगर मुँह में किसी कारण से छाले पड़ गए हों, तो मुँह में थोड़ा सा पीपरमेण्ट रखने से आराम होता है।

दूसरी दवा

किशमिश और काली मिर्च चबाने से मुँह के छालों में विशेष लाभ होता है।

तीसरी दवा

सफ़ेद कत्था, कबावचीनी, सफ़ेद चन्दन, मस्तगी—प्रत्येक आठ-आठ माशे और वंसलोचन तीन माशे—इन सबको महीन पीस-छान कर मुँह में बुरकने से आया हुआ

मुँह (छाला) अच्छा हो जाता है। मुँह से अधिक राल टपकाना भी लाभदायक है।

चौथी दवा

अगर किसी का मुँह आ गया हो या मुँह में छोटे-छोटे दाने पड़ गए हों, तो मुलहटी बारीक पीस कर मुँख में बुरक देना चाहिए।

❦

जीभ का फटना

यदि जीभ फट गई हो, तो क़तीरा और लिसोढ़ा समान भाग लेकर जल में पीस ले और गोली बना कर मुख में रक्खे।

❦

रक्त-विकार

सत्यानाशी (करुवा) की जड़ छः माशे और कालीमिर्च पाँच दाने पाव भर पानी में पीस-छान कर पीने से प्रतिदिन क दस्त आकर रक्त शुद्ध हो जाता है, जिसके फलस्वरूप दाद, खाज, आतशक आदि रक्तज-विकार आराम होते हैं। पथ्य में मूँग की दाल; गेहूँ की रोटी और घी देना चाहिए।

दूसरी दवा

कभी-कभी किसी-किसी नीम के वृक्ष से पानी की तरह गाजदार सफ़ेद नीम का मद चुआ करता है। इसे रक्तविकार वाले रोगियों को देने से विशेष लाभ होता है। खन

के फ़साद वाले रोगियों को इसे अवश्य पीना चाहिए, क्योंकि यह रक्त-विकार की मुख्य दवा है। अवस्थानुसार नीम के अर्क़ को एक तोला से तीन तोला तक दूध, शहद या पानी में मिला कर पीना चाहिए; परन्तु दूध गरम न हो।

उपदंश-रोग

यदि किसी के शरीर में गर्मी अर्थात् उपदंश-रोग के कारण घाव हो जायँ, तो कनेर की जड़ को पानी में घिस कर घावों पर लगाना चाहिए।

दूसरी दवा

त्रिफला की राख को शहद में मिला कर घावों पर लगाने से भी लाभ होता है।

नाक की पपड़ी

यदि नाक में पपड़ी पड़ती हो, तो प्रातःकाल गाय के दही में गुड़ मिला कर खाने से लाभ होता है।

बाल-खोरा

जिस स्थान पर बाल-खोरा हो, वहाँ पर अदरक का अर्क़ लगाने से बाल जम आते हैं और शेष बालों का गिरना रुक जाता है।

बिवाई

१—यदि बिवाई फट गई हो, तो उसी स्थान पर मोम रख, आँच दिखा कर ग्लेसरीन लगाना चाहिए।

२—अगर एँड़ी फट गई हो तो बड़ का दूध भरे।

३—बबूल का गोंद पानी में पीस कर भरे।

४—मेंहदी पानी में पीस कर भरे।

होठ और पैर फटना

यदि किसी मनुष्य के होठ और पैर फटते हों, तो नाभि पर नमक मिले घी का लेप करना लाभदायक है।

नाखून उखड़ने पर

१—गरम पानी की टकोर करे।

२—घी, हल्दी और बादाम पीस कर गरम करके बाँधे।

गले की खुजली

अगर गले में खुजलाहट सी होती हो, तो बड़ी हर्र का छिलका मुँह में रक्खे।

नुस्खे

गोरे होने की दवा

राई एक छटाँक, अरण्ड-दाने के बीज एक छटाँक, चमेली के पत्तों का अर्क़ पाव भर, सरसों का तेल तीन छटाँक। पहले राई तथा अरण्ड के दाने दोनों को पीस कर तेल में मिला ले और चमेली के अर्क़ को भी तेल में मिला कर शरीर में मालिश करे। तीन दिन तक स्नान न करे, चौथे दिन स्नान करे तो शरीर अङ्गूर के समान हो जायगा।

❦

मुख-कान्ति-वर्द्धक

बादाम दो तोले, गुलाब-जल तीन पाव, अर्क़-कपूर तीन रत्ती, चन्दन का तेल एक तोला और इत्र तीन बूँद लेकर पहले बादाम को गुलाब-जल में पीस कर फ़लालैन या ब्लाटिङ्ग में छान ले, और उसी में सब चीजें मिला कर शीशी में रख ले। इसके लगाने से मुँह की फुन्सी, व मुहासे इत्यादि दूर हो जायँगे।

❦

मुहासे

जायफल दूध में घिस कर बराबर कुछ रोज़ लगाने से मुँह के मुहासे मिट जाते हैं।

❧

मुख की झाँई

अरण्डी के तेल में चने का आटा मिला कर चेहरे पर मलने से झाँई आदि दूर होकर मुख की सुन्दरता बढ़ती है।

❧

बाल बढ़ाने का उपाय

दो तोले हाथीदाँत के बुरादे को फूँक कर राख कर ले और दो तोले रसौत को उस बुरादे की राख में मिला कर बकरी के दूध में घोल ले। इसका लेप करने से बाल शीघ्र पैदा होकर बढ़ते हैं।

❧

बालों की रक्षा

गाय के दूध में तिल का तेल और गोखुरू पीस कर लगाने से बाल बढ़ते एवं कोमल रहते हैं।

❧

बाल काले बनाना

सूखे आँवले का चूर्ण बारीक पीस कर नींबू के रस में मिला कर लेप करने से बाल काले और चमकीले होते हैं।

❧

शक्ति-वृद्धि

प्याज़ का रस एक तोला और मधु तीन माशे—दोनों को मिला कर पीने से शक्ति और वीर्य बढ़ता है।

दूसरी विधि

गौ के आधा सेर दूध में डेढ़ तोला असगन्ध डाल कर औटाए। फिर उसे छान, मिश्री डाल कर पन्द्रह दिवस नित्य प्रातःकाल पीने से देह की कान्ति बढ़ जाती है। इसी में से थोड़ा-थोड़ा शक्ति के अनुसार निर्बल बालकों को देने से वे बलवान् हो जाते हैं और उनकी क्षीणता दूर हो जाती है। असगन्ध का काढ़ा पिलाने से गर्भिणी स्त्री बलवान् हो जाती है, और बालक ताक़तवर पैदा होता है।

तीसरी विधि

उड़द की दाल घी में भून कर फिर गाय के दूध में पका, मिश्री डाल कर खाने से शक्ति बढ़ती है।

❧

दूब का पाक

स्त्रियों के प्रदर तथा गर्भाशय-सम्बन्धी रोगों में यह दूब-पाक बड़ा उपयोगी है। ताज़ी दूब छाया में सुखा ले; फिर कूट कपड़-छान कर ले। चने का मोहनभोग बनाए और तैयार होने के पाँच मिनिट पहले उसमें चने के आटे से चौथाई दूब का आटा डाल दे। शीतकाल में इसका सेवन करना चाहिए। यह पाक अत्यन्त पुष्टिकारक है।

❧

छाजन

रजस्वला के रक्त का भीगा हुआ कपड़ा सुखा कर तथा जला कर राख कर ले। जहाँ पर छाजन हो वहाँ पर कड़ुवा तेल चुपड़ कर उस राख को वुरक दे। यह आज़माया हुआ उपाय है।

*

स्वप्न-दोष

रात के समय दोनों पाँव धोकर सोए, ऐसा करने से स्वप्न-दोष नहीं होता।

*

छींकें लाने की तरकीब

नौसादर और चूना एक-एक तोला लेकर शीशी में भर दे। यह एमोनिया कहलाता है। इसे सूँघने से छींक आती है और सिर-दर्द को वहुत लाभ होता है।

*

नज़ले का हुलास

गुलवनफ़शा एक तोला, कायफल एक तोला, जायफल एक तोला, उस्तख़ुद्दूस एक तोला, काफ़ूर एक तोला, धनिया एक तोला, रिठड़े का छिल्का छः माशे, काश्मीरी पत्ता एक तोला, सफ़ेद कनेर का फूल एक तोला, धनत्तर के वीज एक तोला, काले सिरस के वीज एक तोला और छोटी इलायची एक तोला—इन सव चीज़ों को इमामदस्ते में वहुत वारीक

कूट-कपड़-छान करके शीशी में रख ले। नज़ले के रोगों के लिए यह हुलास सर्वोत्तम है। इसके सूँघने से छींकें आती हैं और सिर-दर्द आदि रोग तुरन्त दूर होते हैं। दाँतों में यदि नज़ले के कारण दर्द हो, तो इससे दूर हो जाता है। प्रत्येक घर में यह हुलास तैयार रहना चाहिए।

सफ़ेदा

सफ़ेदे को साफ़ और ग़फ़ (मोटे) कपड़े में छान ले। फिर उसको काँसे की थाली में डाल कर काँसे की कटोरी या पैसे से रगड़े। रगड़ते समय नीम की दो-तीन कोंपलें भी डाल ले। यदि आँख में रोहे हों, तो सफ़ेदा आँख में डाला करे और मूँग की उबाली हुई दाल घी में मिला कर आँखों पर बाँधे। कपड़ा फाड़ कर लम्बी और पतली सी थैली बना ले, उसे बीचोंबीच से सी दे। फिर उसमें दोनों तरफ़ दाल भर कर मुँह बन्द करके बाँधे। सवेरे दाल खोल कर भोजन बनाने के बाद तवे पर डाल दे। उसकी जो भाप उठे, उसे रोहे वाली आँखों पर लगाए और उससे आँखों को सेंके।

खाँसी का चूर्ण

नीम के पत्ते लेकर अच्छी तरह साफ़ कर ले। जाले, टहनियाँ आदि कुछ न रहने पाएँ। उन पत्तों के बराबर नमक तोल ले और पत्तों को अच्छी तरह धोकर नमक के

साथ खूब बारीक पीस डाले। फिर उसको एक स्वच्छ मिट्टी के बर्तन में भर कर ढाँक दे, और ऊपर से एक धुला हुआ पुराना कपड़ा चारों ओर लपेट दे। कपड़े के ऊपर अच्छी तरह मिट्टी थोप कर उपलों की आँच में दबा दे और चारों तरफ़ खूब उपले जला दे। जब सब उपले जल जायँ और राख भी ठण्ढी हो जाय, तो उस बर्तन के भीतर रक्खी हुई वस्तु को निकाल कर सूखी सिल पर पीस ले और शीशी में भर कर रख दे। इस चूर्ण को थोड़ा-थोड़ा खाने से खाँसी में बहुत लाभ होता है।

अगर निकालने पर कुछ कसर मालूम पड़े, अर्थात् वह पिसी हुई वस्तु अच्छी तरह जली न हो, तो फिर मुँह बन्द करके जला लेना चाहिए।

घाव का मरहम

सफ़ेद राल छः माशे, अर्क़-कपूर छः माशे, गुलाब का तेल दो माशे—इन सबको एक में पीस कर ११० बार पानी से धोकर घाव पर लगाने से सब प्रकार के घाव अच्छे होते हैं।

मुँह के छाले

पान में चूना अधिक होने से अगर गाल फट गया हो,

तो गोला या नारियल अथवा लौंग खाने से आराम होता है। यह आजमाई दवा है।

बासी पानी का प्रयोग।

यदि प्रातः उठते ही पानी एक गिलास पी लिया जाय, तो अजीर्ण-रोग कभी न होगा।

विष दूर करना

यदि किसी को किसी प्रकार के विष-भक्षण की शङ्का हो, तो गऊ या भैंस के तीन-चार छटाँक विशुद्ध घी में काली मिर्च मिला कर पिला देने से विष का असर नष्ट हो जाता है। इससे अनेकों मरते हुए प्राणियों के प्राण बच गए हैं, परन्तु इसमें शीघ्रता करनी चाहिए। विषनाशक औषधियों में घी एक परमोत्तम औषधि है।

दूसरी दवा

किसी भी प्रकार का कितना ही विष खाने में क्यों न आ गया हो, उतना ही भुना हुआ सुहागा खिलाने से सब जहर मर जाता है।

घर से साँप भगाना

यदि बारहसिङ्गा का सींग घर में लटकाए, तो साँप-बिच्छू

भाग जायँगे। राई और नौसादर को पीस कर घर में डालने से भी सर्प भाग जाते हैं।

卐

सर्प का भय

वैशाख में दो या चार नीम के पत्ते रोज खाने से सर्प-दंशन का भय जाता रहता है।

卐

चूर्ण बनाने की विधि

ज़ीरा स्याह, ज़ीरा सफ़ेद, सोंठ, पीपल, अजवायन, काली मिर्च, काला नमक—यह सब छः छः माशे और हींग दस माशे लेकर हींग और दोनों ज़ीरों को किसी कोरे बर्तन में भून ले। फिर सबको मिला कर खूब बारीक पीस ले, यह बड़ा हाज़िम है।

दूसरी विधि

सोंठ, पीपल, मिर्च, अजमोदा, अजवायन, सेंधा नमक, सफ़ेद ज़ीरा और स्याह ज़ीरा—सब एक-एक तोला तथा हींग दो आने भर लेकर हींग के अतिरिक्त सब औषधियों को महीन चूर्ण करके कपड़े से छान कर रख ले और किसी लौह पात्र में थोड़ा घी छोड़ कर उसमें हींग भून ले और उक्त चूर्ण में मिला ले। इस चूर्ण को हिंग्वाष्टक चूर्ण कहते हैं। यह चूर्ण अग्नि को दीप्त करता है और शूल का निवारण करता है। चार

आने भर चूर्ण को घी में मिला कर भोजन के पहले कौर में शामिल करके खाना चाहिए।

तीसरी विधि

नौसादर तेरह तोले, काली मिर्च तेरह तोले, काला नमक तेरह तोले, भुनी हुई हींग एक तोला—इन सबको कूट-छान कर चूर्ण बनाए। एक या दो माशे की मात्रा शीतल जल के साथ सेवन करने से पाचन होता है और पेट का दर्द दूर होता है तथा दस्त साफ़ करने में भी प्रसिद्ध है।

चौथी विधि

लहसुन पाँच तोले, जीरा सफ़ेद पाँच तोले, सेंधा नमक पाँच तोले, सोंठ पाँच तोले, काली मिर्च पाँच तोले, पीपल पाँच तोले, हींग नौ माशे, शोधी हुई गन्धक पाँच तोले—सबको कूट कर नींबू के रस में खरल करके गोली बना ले। ये गोलियाँ अजीर्ण, मन्दाग्नि, अफरा और क़ै-दस्त के रोग को लाभदायक हैं।

पाँचवीं विधि

काला नमक और लाहौरी नमक आध सेर (दोनों बराबर मिला कर), सफ़ेद ज़ीरा छटाँक भर, काला जीरा छटाँक भर, काली मिर्च आध पाव, अजवायन एक छटाँक, हींग तीन माशे और पीपल तीन तोले—इन सबको बारीक पीस, कपड़े से छान कर डेढ़ सेर नींबू के रस में पका कर चने बराबर गोलियाँ बना ले।

❀

अमृतधारा बनाने की विधि

कपूर छः माशे, पिपरमिण्ट छः माशे, अजवायन का सत छः माशे—तीनों को एक शीशी में डाल कर हिलाने से एक प्रकार का अर्क़ बन जाता है। उसी को अमृतधारा कहते हैं। इस अर्क़ में से दो-तीन बूँद थोड़े से पानी में डाल कर पीने से पेट का दर्द, अजीर्ण आदि दूर होते हैं। हैजे में भी यह दवा बहुत लाभदायक है। चार-पाँच बूँद बताशे में डाल कर देनी चाहिए। जहाँ बिच्छू या साँप काट खाए, वहाँ पर इसे मलने से बहुत लाभ होता है। इसी अर्क़ को मीठे तेल में मिला कर लगाने से बदन का दर्द दूर हो जाता है।

गुलकन्द बनाने की विधि

गुलाब के देशी फूल (जो चैत्र-वैशाख ही में फूलते हैं और प्रायः मीठे होते हैं) लेकर उनकी पङ्खड़ियाँ निकाल ले। पङ्खड़ियों को उनकी तोल से दूनी लाल शक्कर में भली-भाँति मसल कर एक कर ले और उसके बाद एक दिन धूप में सुखा ले। फिर मर्तबान में भर कर तीन-चार दिन तक बराबर धूप में रख छोड़े।

हाज़मे की गोलियाँ

देशी अजवायन दो छटाँक, पोदीना सूखा हुआ एक

छटाँक, काली मिर्च आधी छटाँक और काल नमक एक छटाँक लेकर पाव भर नींबू के रस में पीस कर छोटे बेर अथवा छोटी हर्र के बराबर गोलियाँ बना कर सुखा ले और बोतलों में भर कर रख दे। खाना खाने के बाद एक गोली खा लेने से पेट-दर्द वग़ैरह तो आराम होगा ही, साथ ही हाज़मा हमेशा दुरुस्त रहेगा। बदहज़मी की शिकायत कभी न होगी। जो चीज़ खाई जायगी, तुरन्त हज़म हो जायगी।

❦

वायु-रोग का अद्भुत चूर्ण

सौंफ, सौंफ की जड़, सोंठ, विधारा, असगन्ध नागौरी, कुटकी, सुरञ्जान शीरीं, चोबचीनी और कद्दू—इन चीज़ों में से प्रत्येक दो-दो तोले कूट कर कपड़-छान करके रख ले। इस चूर्ण की मात्रा छः माशे है। सुबह और रात को सोते वक्त गाय के दूध अथवा पानी के साथ लेना चाहिए। वायु-रोग के कारण घुटने व कमर आदि जोड़ों पर जो दर्द होता है, वह इस चूर्ण के सेवन से शीघ्र दूर हो जाता है।

❦

वायु-शूलनाशक चूर्ण

बड़ी हर्र का छिल्का, सनाय, सोंठ, निसोत, पुरानी सौंफ और काला नमक—एक-एक तोला लेकर बारीक कूट

कपड़-छान करके रख ले। इस चूर्ण की मात्रा नौ माशे है, गरम जल के साथ लेने से वायु-शूल तत्काल दूर होता है। मूँग की दाल आदि हल्की चीज़ों का सेवन करे, भारी चीज़ से बचे।

पाचक-गोली

सोंठ, काली मिर्च, पीपल, नमक लाहौरी, आमलासार गन्धक शुद्ध—सब एक-एक तोला लेकर नींबू के रस में घोट कर चने के बराबर गोली बना ले। इन गोलियों में से एक गोली भोजन के पश्चात् खाने से क्षुधा बढ़ती है और पाचन शक्ति तेज़ हो जाती है। अजीर्ण के लिए यह बहुत लाभदायक है।

दन्त-मञ्जन

बारीक पिसी हुई खड़िया दो तोले, बारीक पिसा हुआ सुहागा डेढ़ माशे, दालचीनी का तेल एक बूँद, लौंग का तेल दो बूँद, पिपरमेण्ट का तेल दो बूँद—इन चीज़ों को मिलाने से बहुत ही उपयोगी दाँतों का मञ्जन तैयार होता है।

दूसरी विधि

बादाम के छिल्के की राख दो तोले, मस्तगी छः माशे, काली मिर्च छः माशे, सेंधा नमक छः माशे, कपूर छः माशे—

इन सब चीज़ों को कूट कपड़-छान करके साफ़ शीशी में रख ले। दाँतों के लिए यह मञ्जन बहुत उपयोगी है।

तीसरी विधि

दालचीनी का चूर्ण चार तोले, रीठे का चूर्ण एक तोला, फिटकरी छः माशे, कत्था दो तोले, पिपरमेण्ट दस रत्ती, कपूर बीस रत्ती, इलायची एक तोला, दालचीनी का तेल चार माशे—इन सब वस्तुओं को कूट कर बारीक चूर्ण बना ले। फिर इस चूर्ण से चौगुना इसमें सेलखरी का चूर्ण मिला कर प्रयोग करे। यह दन्त-मञ्जन बहुत उत्तम है। दाँतों के सब मल को शुद्ध करता है, और दाँतों के कीड़ों को मारता है।

चौथी विधि

फिटकरी, सोंठ, मस्तगी, अकरकरा, जावित्री, जायफल काली मिर्च, दालचीनी, इलायची छोटी; यह सब तीन-तीन माशे, केशर तीन माशे, कपूर दो माशे, कस्तूरी दो रत्ती—इन सबको कूट कर बहुत बारीक कपड़-छान कर ले। दाँतों को मज़बूत बनाने के अतिरिक्त यह मुख को बहुत सुगन्धित रखता है।

पाँचवीं विधि

छोटी इलायची, कत्था सफ़ेद, बंसलोचन, रूमी मस्तगी, कसीस ज़र्द, भुनी सब्ज़ माजू, फिटकरी, बावङ्गदल की भूसी, सङ्ग जराहत, काली मिर्च, नमक लाहौरी और मग़ज़

कंद्दू—यह सब चीज़ें बराबर-बराबर पीस-छान कर बारीक कर ले और मञ्जन करके, घण्टा भर तक कुल्ला न करे।

छठी विधि

खट्टे अनार के छिल्के दो तोले ग्यारह माशे, साफ़ फिट-करी दो तोले चार माशे, अकरकरा सात माशे, गुलाब के फूल सात माशे, माजूफल सात माशे—ये सब दवाएँ कूट कपड़-छान करके दाँतों पर मलने से दाँतों के सब प्रकार के रोग दूर होते हैं।

सातवीं विधि

सीप को जला और भस्म बना कर यदि उसे दाँतों में मला जाय, तो दाँत शुद्ध हो जाते हैं।

आठवीं विधि

कत्था दो तोले, मुश्क का फूल (कपूर) छः माशे, लौंग एक तोला, छोटी इलायची के दाने एक तोला, अजवायन का सत तीन माशे, मरमुकी (बीजाबोल) एक तोला, कारबोलिक एसिड एक ड्राम, कीरिया जोट एक ड्राम, पिपर-मेण्ट का तेल एक ड्राम, यूकेलिप्टस ऑयल एक ड्राम, बोरिक एसिड चार ड्राम, खड़िया-मिट्टी पाँच तोला, फिटकरी एक तोला, अकरकरा एक तोला, नसवार छः माशे, नीलेथोथे की खील तीन माशे, सुपारी जली हुई दो तोले, बादाम का जला हुआ छिल्का ढाई तोले—खूब बारीक पीस कपड़े से छान ले। नीलेथोथे को तवे पर भून ले। फिर पिपरमेण्ट

का तेल तथा यूकेलिप्टस का तेल, जिस मात्रा से बतलाया गया है, मिला दे और बहुत साफ़ बोतल अथवा शीशी में भर कर रख लें। किन्तु डाट सदा लगा रहे। इस मञ्जन को ब्रश अथवा दातौन से नित्य लगाए—दाँतों के कीड़े, उनके दर्द आदि को तुरन्त आराम तो होगा ही, साथ ही नित्य-प्रति व्यवहार में लाने से दाँत सदा साफ़ और मजबूत रहेंगे।

❦

निषेध

इन चीजों को इन महीनों में खाना मना है। चैत में गुड़, वैशाख में तेल, आषाढ़ में बेल, भादों में मट्ठा, क्वार में करेला, कार्तिक में दही, अगहन में जीरा, पूस में धनिया, माघ में मिश्री और फागुन में चना।

❦

निषेध दूसरा

व्यायाम, मैथुन, दौड़ना, तैरना, सवारी करना, धूप में रहना—इन चीजों को भोजन के बाद न करना चाहिए।